कर्म भूमि के नायक

अनुज प्रताप सिंह सूर्यवंशी

गुरूकुल अखण्ड भारत

पता : हाउस नं0 23, ग्रा सपहा, पोस्ट सौधा, तहसील पूरनपुर
ज्नपद पीलीभीत, उ0प्र0 पिन कोड 242123

कर्म भूमि के नायक

संपादक
अनुज प्रताप सिंह सूर्यवंशी

प्रथम संस्करण जनवरी-2024
प्रकाशक गुरूकुल अखण्ड भारत

ISBN : 978-81-964040-1-7

Editor : Anuj Pratap Singh Suryavanshi
Publisher : Gurukul Akhand Bharat
Address : H.No. 23, Vill Sapaha Post Sondha, Tehsil Puranpur
Dist. Pilibhit U.P. Pin 242123
Contact : +91 7599289803
E-Mail : info.gurukulakhandbharat@gmail.com
Website : www.gurukulakhandbharat.org

मूल्य :- निशुल्क

अनुज प्रताप सिंह सूर्यवंशी
संस्थापक/राष्ट्रीय अध्यक्ष

राम निवास कश्यप
रा.उप./कार्य योजना प्रमुख

रजनेश कुमार
निर्देशक

अर्कवंशी पंकज सिंह 'दिनकर'
संयोजक/उपसंपादक

पूनम सिंह भदौरिया
उपसह संपादिका
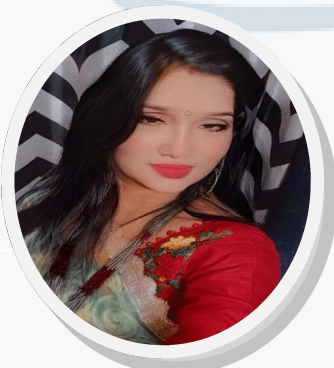
डा. आदित्य कुमार अंशु
उपसह संपादक

प्रतिभा पाण्डेय
उपसह संपादिका

अनुक्रमणिका

1	प्रस्तावना	४—५
2	राजा हरिश्चंद्र — मलखान सिंह पंथी	६—७
3	व्यथा बूढ़े मां बाप की — चेतन लाल श्रीवास्तव	८
4	सरहद पर हो निर्भीक खड़ा — चेतन लाल श्रीवास्तव	८
5	राम रंग — प्रो. डॉ. ललिता बी. जोगड	९
6	नायक — बाल कृष्ण पचौरी	१०
7	स्वामी विवेकानन्द — प्रतिभा पाण्डेय	१०
8	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती — चन्द्रगुप्त वर्मा अकिंचन	११
9	साहित्यकार डा० हेमचन्द्र दुबे — भुपेन्द्र सिंह कण्डारी	१२—१४
10	जवान — भुपेन्द्र सिंह कण्डारी	१५
11	आर्य समाज की नींव — डा० भोला प्रसाद आग्नेय	१६
12	भयदोहन अर्थात ब्लैकमेल — डा० बृजवाला गुप्ता	१७—१९
13	अंर्तमन का — डा० जया मोहन	१९
14	अंर्कवंशी क्षत्रिय का इतिहास — ठा० एस० के० सिंह सूर्यवंशी	२०—२१
15	सवित्रीवाई फुले — डॉ० गया शंकर प्रेमी	२२
16	लाल बहादुर शास्त्री जी पर मुक्तक — डॉ फतेह चन्द बैचेन	२२
17	राजा राम मोहन राय — रोमित हिमकर	२३
18	स्वामी विवेकानन्द — डॉ० चन्द्रदत्त शर्मा	२३
19	स्वामी विवेकानन्द — डॉ० रमाशंकर शर्मा	२४
20	महात्मा गौतम बुद्ध — कुमारी पलक यादव	२५
21	शिक्षक — मोनिका डागा	२६
22	चन्द्र शेखर आजाद — डॉ० राजेश तिवारी	२७
23	शोषित नारी/मां भारती — पूनम सिंह भदौरिया	२८
24	गांधी जी — आदित्य कुमार ''वाल कवि''	२९
25	अब लौट रे नाविक — प्रतिभा पाण्डेय	३०
26	माँ सरस्वती वन्दना — तुलसीराम राजस्थानी	३१
27	कलयुग के राम खंड पर, आरम्भ अब प्रचण्ड कर — महेंद्र कुमार	३२
28	पंजाब केशरी लाला लाजपतराय — चन्द्र गुप्त वर्मा ''अकिंचन''	३३

अनुक्रमणिका

29	धरती थमीं नही – सुमित अर्कवंशी	३४
30	हे मातृ भूमि – तरूण बंदा	३४
31	यह दिव्य तिरंगा है – अर्कवंशी पंकज सिंह ''दिनकर''	३५
32	वर्दियां – अनूप एकलव्य	३६
33	जनता ही सर्वोच्च विधाता – आदित्य कुमार ''वाल कवि''	३७–३८
34	महादेवी वर्मा के प्रति – डॉ० राम सेवक 'विकल'	३९
35	वीर सुभाष – डॉ० आदित्य कुमार 'अंशु'	४०
36	मुस्कान – शिखा शुक्ला	४१
37	दान – मोनिका डागा	४२–४३
38	विवेकानन्द – सुनीलानंद, राजस्थान	४४–४५
39	सरसों – अंतिमा अग्निहोत्री	४६
40	वीर शिवाजी राजे – उमाजी सुभाष पाटिल	४७
41	वीर पुरूष महाराणा प्रताप – महाश्वेता राजे	४८
42	विशिष्टतम नेता थे अटल विहारी वाजपेयी – रमाकान्त शर्मा	४९
43	कृषक – अनुप्रिया झा	५०
44	किसान – डॉ० अशोक जाटव	५१
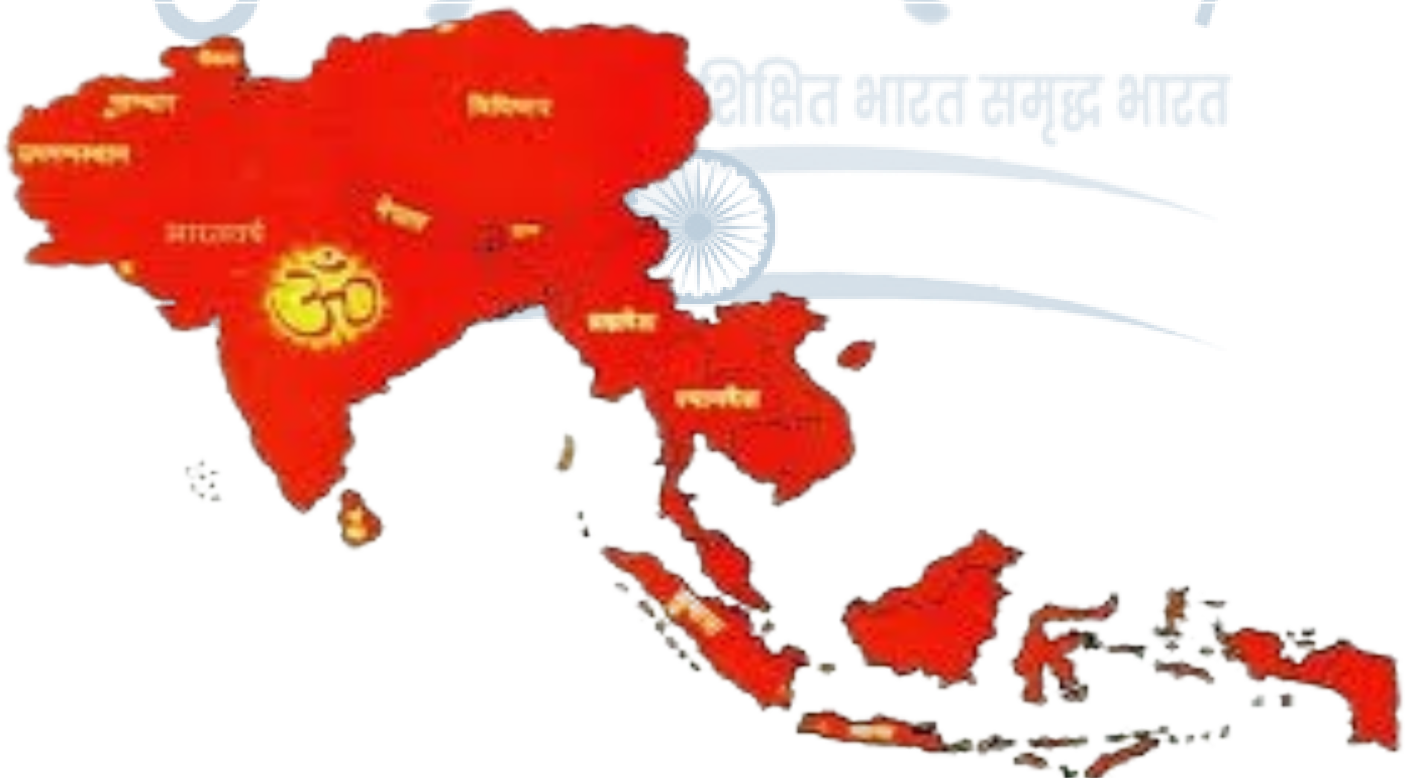
प्रस्तावना

संपादक की कलम से

गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेवल ट्रस्ट के साहित्य मंच के

माध्यम से सभी साहित्यकारों/ रचनाकारों का द्वारा स्व रचित लेख एवं आलेख का निशुल्क प्रकाशन किया जाता है, **''कर्म भूमि के नायक''**, जो अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता और सेवा की भावना के साथ कार्य करते हैं। ये लोग समाज, राष्ट्र या संसार के लिए उपयुक्त और मौद्रिक योजनाओं का समर्पण करते हैं। वे अपने क्षेत्र में प्रथम आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए जाने जाते हैं और समस्त समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं।

इस शब्द का अर्थ है कि वे व्यक्तियों होते हैं जो अपने कर्म भूमि, यानी अपने क्षेत्र या कार्यक्षेत्र में महान कार्य करके उत्कृ ष्टता की ओर प्रगट होते हैं। ये नायक समाज में प्रेरणा स्रोत बनते हैं और अपने कार्यों के माध्यम से समाज को सुधारने में सहायक होते हैं। वे न केवल अपने उद्दीपक क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं, बल्कि दूसरों को भी प्रेरित करने में सक्षम होते हैं।

ये नायक विभिन्न क्षेत्रों में हो सकते हैं, जैसे कि शिक्षा, विज्ञान, साहित्य, कला, सामाजिक सेवा, राजनीति, खेल, और व्यापार आदि। उनका मुख्य लक्ष्य सामाजिक सुधार और प्रगति होती है, और वे अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता की दिशा में गति करते हैं।

''शिक्षाविद'' – 'शिक्षा देने वाला'' या ''अध्यापक''। शिक्षाविद वह व्यक्ति होता है जो शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करता है और छात्रों को विभिन्न विषयों में ज्ञान और कौशल सिखाता है।

शिक्षाविद अक्सर विद्यालयों, कॉलेजों, या अन्य शै क्षणिक संस्थानों में नियुक्त होते हैं और विभिन्न शैक्षणिक कार्यों का प्रबंधन करते हैं। उनका कार्य छात्रों को सि खाना, उनकी उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करना, और उन्हें समृद्धि की दिशा में मार्गदर्शन करना होता है।

एक अच्छा शिक्षाविद अपने छात्रों के साथ संवाद करता है, उन्हें नए और रोचक तरीकों से सिखाता है, और उनकी सामाजिक और आत्मिक विकास में सहायक होता है। उनका कार्य न केवल ज्ञान देने में होता है, बल्कि उन्हें सच्ची सीख मिलती है और वे जीवन के लिए तैयार होते हैं।

किसान भूमि पर कृषि कार्य करता है और विभिन्न प्रकार की फसलें उगाता है, जो खाद्य, वस्त्र, और अन्य आवश्यक वस्त्रों के लिए उपयोग होती हैं।

किसान का कार्य बहुत विविध हो सकता है और इसमें अनेक प्रक्रियाएं शामिल हो सकती हैं जैसे कि बुआई, पौधपालन, पोषण, और प्राकृतिक संसाधनों का सही तरीके से उपयोग करना। किसान अपने क्षेत्र में विभिन्न कृषि तकनीकों का भी उपयोग कर सकता है ताकि उसकी उत्पादकता बढ़े और उसे बेहतर मुनाफा हो।

किसान अपने कठिनाईयों के बावजूद अपने काम में निरंतरता और समर्पण दिखाता है और अपनी मेहनत से समृद्धि बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध होता है। उनकी भूमि कृषि से नहीं ही उनकी जीवनशैली बल्कि समाज की आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

''वैज्ञानिक'' एक व्यक्ति को संदर्भित करने वाला शब्द है जो विज्ञान में विशेषज्ञता रखता है और वैज्ञानिक अध्ययन, अनुसंधान, और प्रयोग में संलग्न होता है। वैज्ञानिक विभिन्न क्षेत्रों में काम कर सकते हैं, जैसे कि भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित, नैतिकता आदि। वैज्ञानिक नए ज्ञान को खोजने और समझने के लिए अनुसंधान करते हैं, और इसे समाज के लाभ के लिए उपयोग करने की कोशिश करते हैं। वे आपसी सहयोग, विचार–विनम्रता, और समृद्धि की दिशा में काम करते हैं।

वैज्ञानिकों का काम सामाजिक समस्याओं का समाधान, नई प्रौद्योगिकियों का विकास, रोगों का इलाज, प्राकृ तिक संसाधनों का उपयोग, और नए और सुरक्षित उत्पादों का निर्माण जैसे क्षेत्रों में हो सकता है। वे भूमिका निभाते हैं जो सामाजिक, आर्थिक, और वैचारिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

"कर्म भूमि के नायक" एक प्रमुख व्यक्ति को संदर्भित करने के लिए एक गौरवपूर्ण शीर्षक होता है, जो किसी विशेष क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण या प्रभावशाली होता है। यह शब्द अक्सर राष्ट्रीय या सामाजिक महत्व के व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है, जिनका कार्य और योगदान अपने समय में और आने वाली पीढ़ियों के लिए महत्वपूर्ण था और है।

नायक – उनके जीवन, कार्य, और उनके समय के सामाजिक और ऐतिहासिक परिपेक्ष्य को प्रकट करने का एक अवसर होता है। यह एक व्यक्ति के साहस, समर्पण, और योगदान की महत्वपूर्ण घटनाओं को दिखाने का माध्यम भी हो सकता है। उनके प्रमुख कार्यक्षेत्र, उपलब्धियों, और सामाजिक परिपेक्ष्य में उनके प्रभाव को दिखाने का भी अवसर हो सकता है। यह उनकी जीवनी की मुख्य घटनाओं को बताता है जिन्होंने उन्हें एक महानायक बनाया और उनके समय के लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत बने। एक महानायक उनके सामाजिक, राजनीतिक, या वैशिष्ट्यपूर्ण कार्यों के साथ उनके विचारों, मूल्यों, और उनके जीवन के महत्वपूर्ण टुकड़ों को भी जोड़ सकती है। यह उनके योगदान की महत्वपूर्ण और सांकेतिक भूमिका को प्रस्तुत करता है जिससे हम उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को समझ सकते हैं। इस प्रकार, महानायक की प्रस्तावना एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के जीवन और कार्य को महत्वपूर्ण और गौरवशाली ढंग से प्रस्तुत करने का माध्यम होती है।

नायक एक महत्वपूर्ण रोल निभाने वाले व्यक्ति का चरित्र होता है, जो आम तौर पर विशेष गुणों और महान कार्यों के साथ प्रस्तुत किया जाता है। यह चरित्र अक्सर किसी समाज या युग के महत्वपूर्ण समस्याओं या परिस्थितियों के समाधान के लिए संघर्ष करता है और उदाहरण स्वरूप और प्रेरणा स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

नायक चरित्र के कुछ महत्वपूर्ण गुण निम्नलिखित हो सकते हैं:-

साहसिकता– महानायक चरित्र आमतौर पर आपत्तिओं और कठिनाइयों का सामना करते हैं और उन्हें साहस से पार करते हैं।

निष्ठा– वे अपने लक्ष्यों के प्रति पूरी तरह से समर्पित रहते हैं और कभी हार नहीं मानते।

समाजसेवा– महानायक चरित्र अक्सर अपने समाज और देश की सेवा में लगे रहते हैं और अपने कौशल और संसाधनों का उपयोग सामाजिक सुधार के लिए करते हैं।

ईमानदारी– ये चरित्र आमतौर पर नैतिकता और ईमानदारी के महत्व को मानते हैं और उनके कार्यों में यही मूल्यों का पालन करते हैं।

उत्साह– महानायक चरित्र आमतौर पर आपत्तियों के समय भी उत्साह और ऊर्जा से भरपूर होते हैं और लोगों को प्रेरित करते हैं।

समर्पण– वे अपने लक्ष्य के लिए अपने आप को समर्पित करते हैं और अक्सर अपने स्वार्थ को परिपेक्ष्य में रखते हैं।

प्रेरणा स्रोत: महानायक चरित्र आमतौर पर दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करते हैं और उनके जीवन से सीखने के लिए बड़ी मात्रा में प्रेरित करते हैं।

नायक चरित्र कई कहानियों और कला रूपों में पाए जा सकते हैं और वे आमतौर पर समाज के एक महत्वपूर्ण मुद्दे को प्रस्तुत करने के रूप में कार्य करते हैं, जो हमें सोचने और क्रियान्वित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

संस्थापक
गुरूकुल अखड भारत

राजा हरिश्चंद्र

आज जो कहानी मां सरस्वती की प्रेणा से लिपिबद्ध करने जा रहा हूं यह कहानी है भगवान श्री राम के पूर्वज महाराज हरिश्चंद्र जी की एक बार गांव में अपने पिता जी के साथ में बैठा हुआ था तभी पिता जी से कहानी सुनाने का आग्रह किया तब मेरे पूज्य पिता जी द्वारा मुझे सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र की कहानी सुनाना आरंभ किया यह उस समय की बात है जब महाराज हरिश्चंद्र अपना राजकाज बड़ी ही सत्य निष्ठा और कुशलतापूर्वक चला रहे थे एक दिन वह अपने राजमहल में अपनी रानी तारामति और पुत्र रोहित के साथ रात्रि विश्राम कर रहे थे।

रात्रि में सोते समय महाराज हरिश्चंद्र ने स्वप्न देखा सपने में महाराज ने देखा की उनके दरबार में महर्षि विश्वामित्र पधारे हुए हैं और महाराज ने उन्हें अपना सम्पूर्ण राज्य दान में देते हुए देखा लेकिन अगले दिन सुबह जब महाराज हरिश्चंद्र जागे तो सपने को भूल गए परंतु विधिवस महर्षि विश्वामित्र जी राजदरबार में पधारे और महाराज हरिश्चंद्र को महर्षि विश्वामित्र को देखकर अपना स्वप्न का स्मरण हो आया और महराज ने अपना स्वप्न दरबार में उपस्थित सभी राजदरबारियों के समक्ष उपस्थित विश्वामित्र जी को सुनाया महर्षि विश्वामित्र ने हंसकर कहा तो राजन आज से सारा राज्य हमारा हुआ क्योंकि जैसा कि आपने अभी – अभी कहा कि आपने अपना सम्पूर्ण राज्य हमें दान में दे दिया है। और हमने सुना है ष्रघुकुल रीति सदा चली आई प्राण जाए पर वचन न जाईष महाराज ने अपने वचन पूर्ति के लिए खुशी खुशी अपना सम्पूर्ण राज्य दान में दे दिया लेकिन दान के बाद अब दक्षिणा की बारी आई तो महाराज हरिश्चंद्र सोचने लगे मैंने अपना राज्य तो पहले ही दान कर दिया है अब दक्षिणा के लिए धन कहां से लाऊं बहुत विचार करने के पश्चात राजा हरिश्चंद्र ने खुद को बेचने का फैसला किया और काशी की ओर चल पड़े उधर रानी तारामति को यह सब ज्ञात हुआ तो वह भी अपने पुत्र रोहित के साथ महाराज के साथ काशी की ओर चल पड़ी रानी तारामति और पुत्र रोहित को एक वैश्य ने खरीद लिया रानी तारामति और पुत्र रोहित दास दासी के रूप में सेविकाएं करने लगें उधर महाराज हरिश्चंद्र को काशी शमशान के स्वामी कालू मेहतर ने ख़रीद लिया और कभी सिंहासन पर विराजमान होने वाले राजा हरिश्चंद्र आज शमशान भूमि में कर बसुलने का कार्य करने लगे समय बीतता गया एक दिन राजा के पुत्र रोहित को एक सर्प ने डस लिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई और रानी तारामति अपने पुत्र को लेकर अंतिम संस्कार करने के लिए शमशान भूमि में जा पहुंची परन्तु रानी तारामति के पास शमशान भूमि का कर देने के लिए भी धन नही था दु:ख और भाग्य के कठोर अघात से अपने पुत्र रोहित के शव को अपनी गोद में उठाय हुए शमशान भूमि में राजा हरिश्चंद्र के सामने खड़ी हुई थी लेकिन राजा हरिश्चंद्र अपने सत्य निष्ठा और कर्तव्य पालन करते हुए रानी से शमशान कर मांगते हैं क्योंकि शमशान कर लेना नियम था और वह अपने मालिक की आज्ञा का पालन कर रहे थे राजा हरिश्चंद्र अपनी पत्नी से बोले कर तो देना ही पड़ेगा फिर राजा हरिश्चंद्र ने कहा तुम्हारे पास कर देने के लिए धन नही है तो अपनी साड़ी का कुछ हिस्सा फाड़कर कर के रूप में दे दो लाचार होकर रानी ने अपने पुत्र के अंतिम संस्कार के लिए जैसे ही साड़ी फाड़ना शुरू किया उसी समय महर्षि विश्वामित्र वंहा पर उपस्थित हो गए और रानी को साड़ी फाड़ने से रोक कर बोले हे राजा हरिश्चंद्र तुम धन्य हो ये सब तुम्हारी परीक्षा थी जिसमें तुमने यह सिद्ध कर दिया है कि तुम श्रेष्ठ, दानवीर, कर्त्तव्यनिष्ट और सत्यवादी हो। इतना कहकर महर्षि विश्वामित्र ने अपने तपोबल से राजा हरिश्चंद्र के पुत्र रोहित को जीवित कर दिया और राजा को उनका सम्पूर्ण राज्य भी लौटा दिया और इतना ही नहीं महर्षि विश्वामित्र ने राजा हरिश्चंद्र को वरदान दिया और कहा संसार में जब भी कभी धर्म, दान, कर्त्तव्य और सत्य की बात की जाएगी राजा हरिश्चंद्र का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ सबसे पहले लिया जाएगा आज भी हमारे देश में महाराज हरिश्चंद्र के दानवीरता की कहानी सुनाई और पढ़ाई जाती हैं राजा हरिश्चंद्र इतने बड़े सत्यवादी और दानवीर थे कि सत्य के मार्ग पर चलने के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण राजपाट, पत्नी और पुत्र का मोह भी त्याग दिया .धन्य हो महाराज हरिश्चंद्र की जय हो।
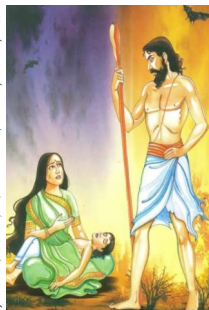
लेखक
मलखान सिंह पंथी
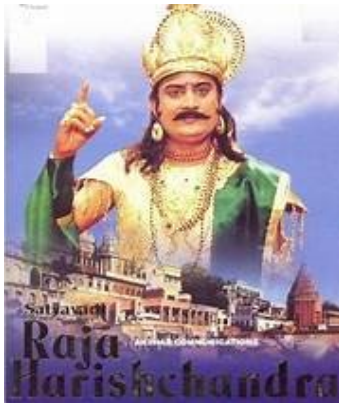
राजा हरिश्चंद्र

सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र
चांद बदले सूरज बदले,
चाहे बदले सकल जहान।
दानवीर बदले नहीं,
सत्यवादी हरिश्चंद्र महान।।
महर्षि विश्वामित्र ने,
छेड़ी परीक्षा आन।
राजपाट सब ले लिया,
विपत पड़ी है आन ।।
विश्वामित्र ने ठान लिया ,
दक्षिणा मांगी आए।
राजा ने निश्चय किया,
स्वयं को बेचें जाए।।
रानी तारामति ने,
जब समाचार यह पाए।
अपने पुत्र को साथ ले,
दौड़ी दौड़ी आएं।।
स्वामी सत्य के मार्ग पर,
हमको चलो लिवाए।
राजा काशी को चले,
रानी को संग लिवाए।।
तारामति और पुत्र को,
एक वैश्य खरीदा आए।
राजा हरिश्चंद्र बिके,
मेहतर कालू के घर जाए।।
राज कभी करते रहे,
शमशान भूमि में आज वही
कर लेते हैं आए।
भाग्य विडंबना विकट रही,
रोहित सांप सताए।।
मृत्यु रोहित की हुई,
रोती रानी हाए।
पुत्र को गोदी में लिए,
पहुंची घांट पे आए।।
राजा कर्त्तव्य से बंधा,
मांगा कर है आए।
रानी पास में धन नही,
कर को कैसे चुकाए।।
फाड़ने साड़ी का पल्लू,
रानी हाथ बढ़ाए।।
रोका रानी को तभी,
महर्षि पहुंचे आए।।
राजपाट बापिस किया,
रोहित के लोटे प्राण,
बोले वचन सुनाए।
जब–जब सत्य की बात हो,
हरिश्चंद्र का नाम सदा
सम्मान से लेंगे आए।।
यह पुण्य कथा हरिश्चंद्र की,
पंथी ने कही सुनाए।
विजय सदा ही सत्य की,
होती अंत में आए।।
महाराजा हरिश्चंद्र हैं,
अपनी रीत निभाए।
रघुकुल रीति सदा चली
आए।
प्राण जाए पर वचन न
जाए।।

शिक्षक साहित्यकार
मलखान सिंह पंथी

लेखक के बारे में

श्री मलखान सिंह पंथी जी का जन्म २ अगस्त १९९१ में भारत के हृदय स्थल मध्यप्रदेश के विदिशा जिले में ग्राम बींझ में हुआ। श्री मलखान सिंह पंथी जी की माता जी श्रीमती नर्वदी बाई और पिता जी श्री बाबूलाल पंथी है।

इन्होने अपने माता पिता के पश्चात अपने शिक्षक आदरणीय बिंद कुमार पटेल जी को अपना आदर्श माना। पंथी जी का कहना है, कि एक सफल रचनाकार और अपनी खुद की रचनाओं को प्रकाशित करने का सपना कभी साकार नहीं हो पाता अगर उनके माता–पिता और गुरुजनों का आशीर्वाद उन पर पर नही होता। अपने शिक्षाकाल से ही गुरुजनों की विशेष कृपा इन पर रही।

इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव की ही शासकीय शाला में ग्रहण की। उसके पश्चात गांव से अठारह किलोमीटर दूर शमशाबाद के शासकीय विद्यालय, महाविद्यालय से उच्च शिक्षा बी. एड., स्नातक व स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त की। शासकीय महाविद्यालय शमशाबाद से स्नातक, संजय गांधी महाविद्यालय विदिशा से बी. एड. एवं कुशा भाई ठाकरे महाविद्यालय से सामाजिक कार्य विषय से स्नाकोत्तर हुए।

व्यापम द्वारा आयोजित मध्यप्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा २०१८ ग्रेड २ मैरिट सूची में शामिल होने का भी इन्हें सौभाग्य मिला।

बचपन से ही इन्हें कविता और लेखन का शौक था। श्री मलखान सिंह पंथी जी ने प्राचीन और श्रेष्ठ कवियों को अपना गुरु माना और उनकी रचनाओं को पढ़कर ही आगे बढ़े। इनके प्रिय रचनाकारों में प्रेमचंद जी, महादेवी वर्मा जी, गोस्वामी तुलसीदास जी और संत कबीरदास जी जैसे महान रचनाकार रहे।

व्यथा बूढ़े मां बाप की

जो मां तन का दूध पिला कर,
पाल पोस कर बड़ा किया।
अपने पुरुषार्थ के बल पर,
आज तुम्हें वो खड़ा किया।
किया बहुत संघर्ष हर्ष,
जिनको तेरी खुशहाली में।
सुखी देखना तुमको चाहे,
खुद रह कर बदहाली में।
अथक परिश्रम पिता किए,
जब तक उनका सामर्थ चला।
हो भविष्य उज्जवल बच्चों का,
समय न जाए व्यर्थ चला।
यही सोचते करते–धरते,
लाठी आ गई हाथों में।
जो दम–खम पहले दिखता था,
आज नहीं जज़्बातो में।
चला न जाए राह कदम यह,
नहीं उठाए उठता है।
दुनियां में एक पल भी रहना,
नहीं जिसे अब जंचता है।
कल तक जो पैसे वाला था,
आज वही कंगाल हुआ।
मुश्किल हो गया जीवन जीना,
बहुत बुरा यह हाल हुआ।
बेटा बेटी बहु दामाद,
सबके सब हैं भरे पड़े।
अपने में मशगूल सभी हैं,
देख रहा हूं पड़े–पड़े।
सोचा था बेटी जाएंगी,
बेटे साथ निभाएंगे।
जब भी मुझ पर पड़े मुसीबत,
दौड़े दौड़े आएंगे।
लेकिन सब विपरीत हो रहा,
क्या ऐसी मजबूरी है।
जिन पर सब कुछ किया निछावर,
आज उन्हीं से दूरी है।
दर्द बड़ा बेदर्द है यारों,
इस पर जरा विचार करो।
चेतन प्राणी कविता सुनकर,
खुद में जरा सुधार करो।

कवि के बारे में (परिचय)

नाम चेतन लाल श्रीवास्तव
पिता स्वर्गीय श्री कन्हैया लाल
माता स्वर्गीय श्रीमती संत बाल सिंहा
ग्राम व पोस्ट सौरम, जिला– गाजीपुर
शिक्षा स्नातक
जन्मतिथि २ जुलाई सन १९७३
कार्य संगीत अध्यापक
(सनफ्लावर पब्लिक स्कूल नंदगंज गाज़ीपुर)

सरहद पर हो निर्भीक खड़ा

सर्वस्व त्याग कर जो अपना,
सरहद पर हो निर्भीक खड़ा।
यह नहीं बता सकता कोई,
भूमि पर उनसे कौन बड़ा।
देखो उस ओर तनिक देखो,
वह तरुण सौर्य साहसी प्रबल।
तन्मयतापूर्वक लक्ष्य साध,
जिनकी प्रवृत्ति अत्यंत धवल।
जल थल से गगन तलक जिसका,
रहता पहरा हर वक्त कड़ा।
यह नहीं बता सकता कोई,
, भूमि पर उनसे कौन बड़ा।।
बर्फीली चोटी के ऊपर,
जो अपना पांव जमाया हो।
जहां कोई परिंदा ना टपके,
वहां ऐसा ध्यान लगाया हो।
वह ध्यानी है वह मौनी है,
वह योगी हैं वह तपस्वी है।
जिसके सिर पर मां हाथ रखे,
वह कितना बड़ा यशस्वी है।
उनके पुरुषार्थ के सम्मुख,
सबका पुरुषार्थ बौन पणा।
यह नहीं बता सकता कोई,
भूमि पर उनसे कौन बड़ा।।
वह त्यागी हैं वह बलिदानी,
वह योद्धाओं का योद्धा है।
वह मातृभूमि के लिए समर्पित,
स्वर्णिम साक्ष्य पुरोधा है।
जंगल पहाड़ खंडहरों में,
जो तपा रहे खुद को जाकर।
जो देश विरोधी ताकत को,
समझा आते हों जा जा कर।
तन मन श्री मां चरणों में रख,
सौगंध निभाने निकल पड़ा।
यह नहीं बता सकता कोई,
भूमि पर उनसे कौन बड़ा।।
जहां श्रद्धा और समर्पण है,
जिस तरुणाई में तर्पण है।
उनका क्या कोई है मिशाल,
वह तो दुनियां का दर्पण है।
सीमा पर गोली खाकर भी,
आगे ही बढ़ते जाएं जो।
दो चार नहीं हजार बार,
ठोकर खाकर उठ जाएं जो।
वह पीठ दिखाया नहीं कभी,
अंतिम स्वासों तक जंग लड़ा।
यह नहीं बता सकता कोई,
भूमि पर उनसे कौन बड़ा।

चेतन लाल श्रीवास्तव

राम रंग

दिपोत्सव है राम रतन का द्य
राम ध्वनी का, राम रंग का द्यद्य

तन मन लहरे राम नाम से
केवल जय जय कार कान से
सुने चराचर रघूवीर नाम का

दिपोत्सव है राम रतन का
राम ध्वनी का राम रंग का

कण कण जाग उठा धरा का
रोम रोम पुलकित विश्व का
नव रश्मी के नये किरण का

दिपोत्सव है राम रतन का
राम ध्वनी का राम रंग का

आज उषा बिखरे दशदिशा
पाषाणभेद करे मन मनीषा
लिन हुआ उन्माद दुर्जन का

दिपोत्सव है राम रतन का
राम ध्वनी का राम रंग का

प्राणवायू की गंध मिली
गर्दन सिधी चौडा है सिना
मृद्गंध रुधीर मम आसूओं का

दिपोत्सव है राम रतन का
राम ध्वनी का राम रंग का

कमलनयन मेरे राम हृदय के
चौतन्य अधर वे राम भक्त के

अंबरस्वर गीत लल्ला का
दिपोत्सव है राम नाम का
राम ध्वनी का राम रंग का

अणुव्रतसेवी,
प्रो. डॉ. ललिता बी. जोगड
मुम्बई (महाराष्ट्र)
८७७ वर्ड रेकॉर्ड धारिका

समय के पास भी इतना समय नहीं है,
कि वह आपको दोबारा समय दे सके../

सत कर्म से गाने लायक़ बन जाते हैं।
सतयुग हरिश्चंद्र नायक,
सत कर्म से गाने लायक़ बन जाते हैं।
त्रेता श्री राम चन्द्र नायक,
सत कर्म से गाने लायक़ बन जाते हैं ।

द्वापर श्री कृष्ण चन्द्र नायक,
सत कर्म से गाने लायक़ बन जाते हैं।
कलियुग गौरांग नायक,
सत कर्म से गाने लायक़ बन जाते हैं।

कर्म भूमि में सत्कर्म करो ,
अटके ,भटके का उद्धार करो।
कर्म भूमि के महत्व को समझो,
अपने जीवन महत्व को समझो ।

पुन: पुन: ये नहीं मिलेगा,
शुभ कर्म से जीवन खिलेगा।
खुशी खुशी से जीवन जी लो,
राम नाम का अमृत पीलों ।

कभी किसी की खुशी न छीनो,
कर्म भूमि में बसे हैं दीनों ।
कर्म भूमि के महत्व को समझो,
गरीब अमीर का भाव न समझो ।

बाल कृष्ण नित करें पुकार,
कर्म भूमि समझो सरकार।
कर्म भूमि के नायक बनकर,
उभरो सारे विश्व के ऊपर ।
तभी जाने जाओगे,
नायक तब कहलाओगे।

बाल कृष्ण पचौरी

स्वामी विवेकानन्द

आध्यात्म के गुरू वेदांत विख्याता थे,
नरेन्द्र नाथ दत्त सनातनी प्रतिनिधित्व दाता थे,
अपनी वाक् शैली से अमेरिका का दिल जीतने वाले,
कुलीन बंगाली जीवों में देखते परमात्मा थे।

रामकृष्ण परमहंस के प्रिय शिष्य,
विदेशों तक पहुंचाये वेदांत दर्शन,
बड़ी सूक्ष्मता से दिखाते सौम्य ,
करते नई सभ्यता संस्कृति का मनन।

विचारणीय विचार भी विवेक के भ्राता थे,
निछावर गुरुवर पर गुरू भक्त आत्मा थे।

भूपति नरेन्द्र नाथ ने दी उपाधी स्वामी,
भुवनेश्वरी पूत भक्त थे बंगाल महा स्वामिनी।
जन्मदिन, राष्ट्रीय युवा दिवस रूप मनाया जाता,
प्रसिद्ध देशभक्त है सन्यासी विवेकानन्द स्वामी ।।

(स्वरचित)
प्रतिभा पाण्डेय "प्रति"
चेन्नई
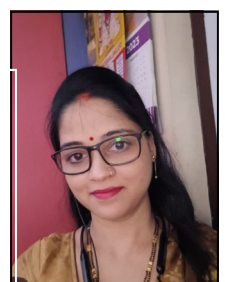
स्वामी श्रद्धा नन्द सरस्वती

अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा के, लाला मुंशीराम प्रथम नाम था।
गुरू कुल स्थापन के हित में, भीष्म प्रतिज्ञा किया प्रखर था।।
तीस हजारी संग्रह कर लुंगा, तब घर में अपने पैर धरूंगा।
गुरुकुल को स्थापित करके, वैदिक शिक्षा प्रारम्भ करूंगा।।
साकार रुप देकर सपने को, मातृ भाषा माध्यम अपनाया।
इन्द्र हरिश्चन्द सुत दोनों को, प्रथम चरण में शिष्य बनाया।।
विश्व विद्यालय कलकत्ता के, मि०वैंडलर ने यह स्वीकार किया।
पूर्ण सफलता मिली गुरूकुल को, मातृभाषा में शिक्षण अंगीकार किया।।
भारतीय समाज सुधार क्षेत्र में, गुरुकुल का योगदान अप्रतिम था।
खान पान परहेजी,जाति पाति था, पंगत भोजन अद्भुत कदम था।।
डा०अंसारी,मि०जिन्ना,डा०किचलू,आसफ अली जैसे मुस्लिम नेता।
ब्रम्हचारियों के संग भोज किये थे, स्वामी श्रद्धानंद जब बने प्रणेता।।
जात–पात तोड़क मंडल के, अधिवेशन अध्यक्ष बने थे।
निज पुत्री, पुत्रों के दोनों वैवाहिक, अन्तर्जातीय सम्बंध किये थे।।

हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान के पोषक, अछूतों के सच्चे उद्धारक थे।
दलितोद्धार सभा के संयोजक, दलितों के सच्चे परित्राणक थे।।
सद्धर्म प्रचारक पत्र दिये जो, शुद्धि मंत्र के थे उद्गाता।
श्रद्धानन्द थे वह बलिदानी, आर्य जनों के भाग्य विधाता।।

कवि का परिचय

नाम –चन्द्रगुप्त प्रसाद वर्मा ''अकिंचन'' गोरखपुर
आत्मज–स्व०रामचन्द्र प्रसाद वर्मा/स्व०जानकीदेवी
आवास –१९रूद्रपुर (बेनीगंज–ईदगाह रोड), गोरखपुर
जन्मतिथि–५जुलाई १९४८/शिक्षा–एम०ए० (सम्प्रति–वाणिज्य कर विभाग में २०–०३–७२ से ३१–०७–२००८ तक सेवारत व कार्यालय अधीक्षक पद से सेवा–निवृत्त।)
साहित्यिक गतिविधि– गद्य व पद्य दोनों विधाओं में रचनायें व लेख तथा समीक्षायें विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित,कई पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन।
प्रकाशित पुस्तकें–१५ एवं विभिन्न संगठनों/मंचों द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत।
विशेष – खड़ी बोली व भोजपुरी के साहित्यकार एवं समाजसेवी।

कवि
चन्द्रगुप्त प्रसाद वर्मा ''अकिंचन''

साहित्यकार डॉ0 हेमचन्द्र दुबे 'उत्तर'

रचनात्मक व्यक्तित्व

शोध सारांश– प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से हम हिन्दी साहित्य एवं कुमाउँनी साहित्य के साहित्यकार डॉ0 हेम चंद्र दुबे के रचनात्मक व्यक्तित्व के माध्यम से उनका जन्म् कब हुआ, जन्म् स्थान तथा शैक्षिक योग्यताओं के बारे में जानेगे तथा डॉ0 हेम चंद्र दुबे कि अब तक कितनी रचनाएं प्रकाशित हो चुकी है, हिंदी भाषा में कितनी रचनाएं प्रकाशित हुई है और कुमाउँनी भाषा में कितनी रचनाएं प्रकाशित हुई है तथा उनके साहित्यिक में योगदान के लिए डॉ0 हेम चंद्र दुबे को अब तक किन–किन संस्थाओं के द्वारा पुरस्कृत किया गया है, उनकी रचनाओं पर विद्वानों किस तरह से अपने विचार व्यक्त किए है प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से इन सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है, डॉ0 हेम चंद्र दुबे की कुमाउँनी भाषा में रचित रचनाओं में कुमाउँनी अंचल विशेष के रीति रिवाज, बोली भाषा, परम्पराओं को उल्लेख मिलता है इसलिए डॉ हेम चंद्र दुबे को आंचलिक साहित्यकार भी कहा जा सकता है।

बीज शब्द –कत्यूर घाटी – जिस क्षेत्र में कत्यूरी राजवंश के राजाओं ने राज किया।
जिया क्वीड़ – मन की बातचीत,
प्रारब्ध का नीड़– भाग्य का घोंसला,
गौं गाड़ाक गीत– गाँव और नदियों के गीत
पराण– प्राण
अभिनव सर्जना– नई रचनात्मकता

प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण गोमती नदी की अविरल और कल–कल करती हुई ध्वनियाँ उत्तराखण्ड के महान राजवंश कत्यूरी राजवंश की राजधानी बैजनाथ माँ कोट भ्रामरी साक्षात् विराजमान है, नजरों के सम्मुख हिमालय पर्वत की बर्फ से ढकी हुई पर्वत श्रृंखलाएँ कुछ ही दूरी पर हिन्दी साहित्य के महान साहित्यकार श्री सुमित्रानंदन पंत की जन्मस्थली कौसानी की प्राकृतिक छटा इसी प्रकृतिक सौदर्य से प्रेरणा लेकर श्री सुमित्रानंदन पंत ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य को जो अनवरत प्रवाह से एक के बाद एक रचनाएं प्रदान की उन्ही रचनाओं के परिणामस्वरूप श्री सुमित्रानंदन पंत को हिन्दी छायावाद के चार स्तंभों में से एक कहा जाता है ऐसे ही प्राकृतिक सौदंर्य के बीच में स्थित कत्यूर धाटी गरूड़ में हिन्दी साहित्य और कुमाऊँनी साहित्य के साहित्यकार डॉ हेम चन्द्र दुबे का जन्म् 04 जून, 1971 में श्री देवीदत्त दुबे व सरस्वती दुबे के घर में हुआ साहित्यकार के पिता एक छोटे व्यवसायी और माता एक कुशल गृहिणी थी साहित्यकार का जन्म् स्थान सिल्ली गांव जो कत्यूर घाटी गरूड़ का एक खूबसूरत गांव है साहित्यकार की प्रारम्भिक शिक्षा नौघर से हुई। इंटरमीडिएट राजकीय इंटर कालेज गरूड़ से प्राप्त करने के बाद उच्च शिक्षा कुमाऊँ विश्वविद्यालय के सोबन सिंह जीना परिसर अल्मोड़ा से हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की तथा स्नातकोत्तर हिन्दी साहित्य विषय में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान किया गया वर्ष 2000 में कुमाऊँनी कहावतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन 'विषय पर प्रोफेसर देवसिंह पोखरिया के निर्देशन में शोध कार्य सम्पन्न किया और कुमाऊँ विश्वविद्यालय से पी–एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की डॉ. हेमचन्द्र दुबे ने विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालय में अनेक विद्यार्थियों के लिए पठन–पाठन कार्य कराया है।

वर्तमान में डॉ. हेमचन्द्र दुबे अपनी सेवाएं हिन्दी विभागाध्यक्ष और कलासंकाय अध्यक्ष कुमाऊँ केसरी पं0 बद्रीदत्त पाण्डेय परिसर (बागेश्वर) उत्तराखण्ड में दे रहे हैं साहित्यकार के निर्देशन में वर्तमान में पांच छात्र शोध पंजीकृत है जो विभिन्न विषयों पर शोध कार्य कर रहे हैं।

साहित्यकार डॉ0 हेमचन्द्र दुबे 'उत्तर'

रचनात्मक व्यक्तित्व

साहित्यकार द्वारा हिन्दी भाषा में पांच रचनाएं प्रकाशित हो चुकी है जो इस प्रकार से है–

1. जीवन की दीक्षा (2005), 2. अभिनव सर्जना (2010), 3. रचनाशती (2015), 4. उम्मीदों का आकाश (2016), 5. प्रारब्ध का नीड़ (2013)

इनके अतरिक्त कुमाऊँनी भाषा में पांच रचनाऐं प्रकाशित हो चुकी है, जो इस प्रकार से है–

1. जिया क्वीड़ (काव्य 2011), 2. गौं गाड़ाक गीत (काव्य 2013) 3. कुमाऊँ की सांस्कृतिक विरासत (सहलेखन) 2015, 4. कुमाऊँनी संस्कृति विविध आयाम (2018) 5. पहाड़ पराण (2021).

साहित्यकार डॉ हेमचन्द्र दुबे ने दूरभाष के माध्यम से उन्होंने अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बताया कि वह दैनिक समाचारों के संपादकीय पृष्ठ पर समसामयिक विषयों पर जो पाठकों की राय मांगी जाती है इस तरह के कॉलम में साहित्यकार विद्यार्थी जीवन से अपने साहित्यिक से संबंधित विभिन्न पक्षों और विविध विषयों पर अपनी राय लिखते रहते थे या अपने विचारों को प्रकट करते थे साहित्यकार ने बताया जब वह 1987 में कक्षा 11 में थे, तब से पत्र कालम लिखना आरम्भ किया। हिन्दी विषय में मास्टर डिग्री ले रहे थे उस समय स्थानीय पत्र पत्रिकाओं में उनकी कविताएं प्रकाशित होने लग गई थी।

हिन्दी साहित्य को कूर्मांचल की देन पत्रिका में डॉ महेन्द्रसिंह महरा 'मधु' साहित्यकार के बारे में लिखते है "डॉ हेमचन्द्र दुबे का 'जीवन की दीक्षा' कविता संग्रह सन् 2005 में प्रकाशित हुआ। अपनी बिटिया के नाम पर लिखे गए इस संग्रह में 50 कविताएं संगृहीत हैं। संग्रह की भूमिका में प्रोफेसर देवसिंह पोखरिया ने लिखा है "मैंने डॉ हेमचन्द्र दुबे की जीवन की दीक्षा संग्रह का अवलोकन किया, इन कविताओं में कुछ मुक्त छंद में लिखी कविताएं हैं, कुछ गजलें हैं। इन दोनों प्रकार की कविताओं में कहीं प्रकृति के नानाविध रूपों के दर्शन होते हैं, तो कहीं सामाजिक संबंधों की सापेक्षता दृष्टिगोचर होती है और कहीं अर्तमन की सुख दुःखात्मक अनुभूति का बिम्बात्मक चित्रण मिलता है, कहीं मानव सुलभ जिज्ञासाएं प्रकट हुई हैं। इस प्रकार 'जीवन की दीक्षा' संग्रह कवि के अंर्तमन की सीधी–सरल प्रस्तुति है। जिस रूप में कवि ने सोचा, वही अभिव्यक्त किया है। इस संग्रह को साठोत्तरी हिन्दी कविता का आधुनिक दस्तावेज कहा जा सकता है, साथ ही इसमें छायावादी रहस्य साधना का पुट भी दिखाई देता है। यह पुस्तक रेखाकंनों–चित्राकंनों से भी सुशोभित है।"[1]

साहित्यकार ने अपनी कुमाऊँनी रचनाओं के माध्यम से कुमाऊँनी संस्कृति के विभिन्न पक्षों को उजागर करने का यथांसम्भव प्रयास किया है कुमाऊँनी संस्कृति, बोली भाषा, परंम्परा और रीति रिवाजों को उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रमुख स्थान दिया है, साहित्यकार ने अपनी रचनाओं के माध्यम से कुमाऊँनी अँचल विशेष का वर्णन किया है यहा के त्यौहार, बोली, भाषा, पशु पक्षी, झरने नदियॉ सभी का वर्णन किया है साहित्यकार एक जन कवि के साथ–साथ मधुर आवाज के भी धनी है अपनी मधुर आवाज के माध्यम से माँ कोट भ्रामरी के स्वरचित भजनों का गायन धार्मिक पवित्र अनुष्ठानों में किया करते है भाषा विद् साहित्यकार डॉ देवसिंह पाखरिया उनके बारे में लिखते है।

"हिन्दी और कुमाऊँनी में समान रूप से रचना करने वाले युवा रचनाकार डॉ0 हेमचन्द्र दुबे 'उत्तर' की अब तक हिन्दी में पॉच और कुमाऊँनी में पांच रचनाऐं सम्मुख आ चुकी है। वे स्वभावतः और प्रकृतितः कवि हैं, यद्यपि वे गद्य भी लिखते है। भाषा माध्यम हिन्दी हो या कुमाऊँनी अनुभूति की गहनता और संवेदना की सघनता का भावा. `च्छालन संपूर्ण शब्द–सौन्दर्य और अर्थ–गौरव के साथ उनकी रचनाओं में रूपायित होता है, विशेषतः कविताओं में मुझे उनके तीसरे कुमाऊँनी

साहित्यकार डॉ0 हेमचन्द्र दुबे 'उत्तर'

रचनात्मक व्यक्तित्व

इस संग्रह की चासनी में उन्होंने कुमाऊँनी की सारी मिठास घोल कर, अपने प्राणों से स्पंदित कर उसे चैतन्य कर दिया है। पहाड़ों में तो कवि के प्राण बसते हैं। नदी, पर्वत, वन, गाड़–गधेरे, खेत–खलिहान, ऋतुएं, दैनंदित जीवन, लोक संपृक्ति, आमजन, नारी आदि सभी कविताओं में प्रश्वसित होते प्रतित होते हैं। इन कविताओं में कवि ने कई सामयिक विसंगतियों, दुर्व्यवस्थाओं, विकास के नाम पर होने वाली लूट–खसोट, प्रकृतिक एवं सामाजिक परिवर्तनों से होने वाले प्रदूषण, पलायन, विखंडित होती मान्यताओं और तार–तार होते जीवन–मूल्यों पर बड़े भोलेपन और सिद्दत के साथ प्रहार किया है। इस संग्रह की गीतात्मक कविताओं का अपना वैशिष्ट्य है। राष्ट्रीयता, देश प्रेम और प्रकृतिपरक कविताएँ नवजीवन और चेतना का संचार करने वाली हैं। कुछ कविताओं में नव्य प्रतीकों और भव्य बिम्बों का नियोजन के साथ कुछ कविताओं में अध्यापकीय गरिमा और आदर्श का प्रतिबिम्बन भी हुआ है। मेरा विश्वास है, 'पहाड़ पराण' संग्रह कुमाऊँनी काव्ययात्रा के विकास में महत्वपूर्ण सोपान सिद्ध होगा।"...2

साहित्यकार की अभी तक कुछ दस रचनाऐं प्रकाशित हो चुकी है इन के अतरिक्त समय–समय पर देश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं एवं प्रतिष्ठत काव्य संकलनों में 250 से अधिक रचनाओं का प्रकाशन एवं आकाशवाणी द्वारा विविध विषयक रचनाओं का प्रसारण हो चुका है।

साहित्यकार को अब तक विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कार एवम् समान से सम्मानित किया जा चुका हैं।

1) छत्तीसगढ़ शिक्षक साहित्यकार मंच द्वारा 'हिरदे कविरत्न'.

2) ऋचा रचनाकार परिषद मध्य प्रदेश द्वारा 'भारत गौरव'.

3) राष्ट्रीय स्वतंत्र पत्रकार परिषद द्वारा 'ब्रज गौरव' मानदोपाधि.

4) सृजन दीप कलामंच, पिथौरागढ़ द्वारा 'सृजन दीप' सम्मान.

5) संगम संस्था उमरियापान, म.प्र. द्वारा 'डॉ. उर्मिलेश स्मृति' सम्मान.

6) साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था सृजना गोरखपुर द्वारा 'काव्यश्री' सम्मान.

7) सरस्वती साहित्य वाटिका खजनी, गोरखपुर द्वारा 'सरस्वती साहित्य' सम्मान.

8) भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा 'ज्योतिबाफुले फैलोशिप'.

9) अनेक संस्थाओं द्वारा नकद राशि से पुरस्कृत/सम्मान.

10)विविध सामाजिक/सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्धता.

साहित्यकार वर्तमान समय में भी लेखन कार्य कर रहे है इनकी अन्य रचनाऐं भी प्रकाशित होनी है कुमाऊँनी संस्कृति विविध आयाम पुस्तक के वल्व पेज में कहानीकार डॉ. बटोही लिखते है "देश में उत्तराखण्ड ही ऐसा भू–भाग है जहॉ बल और बुद्धि का महान संगम है, जिसके बल पर यहां के निवासी पूरे विश्व में छाये हुए हैं।"

श्री भूपेन्द्र सिंह
शोधछात्र– हिन्दी विभाग
कुमाऊँ केसरी पं0 बद्रीदत्त पाण्डेय परिसर
बागेश्वर (उत्तराखण्ड)

भूपेन्द्र कण्डारी

जवान

देश पर जिसको है अभिमान

वह है देश का सिर्फ और सिर्फ जवान।

चाहिए कितने भी मुश्किल हो

राहों में अढिग रहे कर्तव्य पथ।

देश की आन बान और सहान के

लेकिन तत्पर रहे हर वक्त हर समय समान।

देश की सरहदों पर खड़े होकर

देश की करते हैं सेवा हर वक्त।

वतन के लोग अमन चौन से रहते हैं

जब आप सरहदों कर मुस्तैदी से डटे रहते हैं।

सब कुछ न्यौछावर कर दिया देश के लिए

तुमने देश की सुरक्षा भारत माता की रक्षा में

करते हैं तुम बार बार नमन भारत माता के

चरणों में बन्धन तुम वीरों को शत् शत् नमन

रचनाकार परिचय

नाम – भूपेन्द्र कण्डारी

पो०ओ०– चमोली (उत्तराखंड)

जन्म तिथि –25मई1989

शैक्षिक परिचय – एम ए हिन्दी साहित्य, बीएड सीटेट,यूटट परीक्षा उत्तीर्ण, एम ए पत्रकारिता,

वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य विषय में शोधार्थी।

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में दस से शोध पत्र प्रकाशित।

रचनात्मक परिचय – स्थानीय पत्र पत्रिकाओं में कविताएं प्रकाशित।अनेक कविगोष्ठी में प्रतिभा। कवि के रूप में यूट्यूब पर सा क्षात्कार।

लोकतन्त्र में स्वतन्त्र अभिव्यक्ति काव्यसंग्रह प्रकाश अधीन (स्वतन्त्र प्रकाशन)

आर्य समाज की नींव

ऐ भारत के लोगों, सुन लो मेरी बात.
रहती कुरीतियों की, छाई काली रात..
राजसिंहासन पर जब, विधर्मी का आसन.
रहा भारत भूमि पर, कुनीति का शासन.
करते जन जन पर वे, रहे घात प्रतिघात. ऐ भारत के......
दयानन्द सरस्वती का, धरती पर अवतार.
वैदिक संस्कृति का जो, भू पर किए प्रचार.
राह नवल प्रकाश का, कर दिए सूत्रपात.. ऐ भारत के.....
विधवा विवाह का भी, मार्ग किए प्रशस्त.
दूर हटा आडम्बर, जनता जिससे त्रस्त.
विधर्मी पाखंडी को, दिखा दिए औकात.. ऐ भारत के.....
आर्य समाज की नींव, नव युग की कल्पना.

हैं एक समान सभी, थी ऐसी भावना.
उनके जीवन से यह, मिली हमें सौगात.. ऐ भारत के....

..डा0 भोला प्रसाद आग्नेय
टैगोर नगर, सिविल लाइन
बलिया, उत्तर प्रदेश

भयदोहन अर्थात ब्लैकमेल

बृजबाला गुप्ता

बारिश का मौसम था। मैं बालकनी में खड़ी थी। मैंने तेज़ रफ़्तार में गीता को आते देखा, मैंने आवाज़ भी लगाई पर वह अनसुना करके तेज़ी से घर के अंदर चली गई। ष्हो सकता है कोई जरूरी काम हो उसे। दो तीन दिन से लगातार गीता का वही हाल आज तो मैं उससे पूछकर ही रहूंगी। आख़िर बात क्या है?

गीता मेरे मामाजी की इकलौती बिटिया है, पास ही वाले बंगले में रहती है। मामाजी को बचपन से ही माँ से बहुत स्नेह रहा। उन्होंने कभी माँ को अपने से दूर नहीं रखा। गीता और मैं बचपन से ही अच्छी सहेलियां हैं। माँ को बोलकर मैं गीता के घर आ गई देखा तो गीता पसीने में तर–बतर और घबराई हुई थी। मैंने जैसे ही उसके कांधे पर अपना हाथ रखा वो ज़ोर से चिल्ला उठी। मुझे देखा और मुझसे लिपटकर रोने लगी।

गीता क्या हुआ है तुम्हें? क्यों रो रही हो? बताओ मुझे"। दीदी मैं बहुत परेशान हूं समझ नहीं पा रही क्या करूँ। आप विवेक को जानती हो ना, हां वो ही जिससे तुम विवाह करना चाहती हो। मामाजी को बताने वाली थीं।

क्या हुआ है बोलो।

विवेक ने मुझे धोखा दिया, उसने मेरे कुछ कुत्सित जाली फोटोग्राफ बनाये हैं, वो बार बार मुझे ब्लैकमेल कर रहा है। बार बार फ़ोन करके डराता धमकाता है, मैं क्या करूँ कुछ समझ नहीं आ रहा अब आप ही कुछ करो नहीं तो मैं कुछ कर लूंगी।

"पागल हो गई है क्या? तू कुछ भी उल्टा सीधा मत सोच मैं कुछ करती हूं।"

सबसे पहले तो तू मुझे बता क्या तू अब भी उससे प्यार करती है । गीता ने कहा नहीं रजनी दीदी वो प्यार था ही नहीं , विवेक के लिए तो वो महज पैसा कमाने का जरिया था ।

गीता बहन आज के बाद वो तुझे परेशान नहीं करेगा । तुम मुझे बस उसका फोन नं दे दो और बेफ्रिक हो जाओ रजनी ने कहा, तब गीता बोली, दीदी विवेक बहुत ही शातिर है, वो तुम्हारे साथ भी कुछ ग़लत ना कर दें। रजनी बोली मैं जैसा कहती हूं बस तुम वैसे ही करती जाओ, फिर रजनी ने गीता के कान में कुछ कहा ,गीता बोली– ठीक है दीदी । अगले दिन रजनी ने विवेक को फोन किया कि मैंने आप को कई बार देखा है । मैं आप से मिलना चाहती हूं , वो बोला पर मैं तो तुम्हें नहीं जानता तब रजनी ने झूठ बोला कि हम एक ही कालेज में पढ़ते थे। मैं हमेशा तुम्हें दूर से देखती थी तुम मुझे बहुत अच्छे लगते थे। बहुत मुश्किल से तुम्हारा फोन नं मिला ,अब मैं तुम से मिलना चाहती हूं। तब विवेक ने सोचा ....चलो गीता तो मेरे जाल में फंस चुकी है अब रजनी के साथ आगे बढ़ने में क्या परेशानी , विवेक ने मन ही मन सोचा... उस ने रजनी से कहा, ठीक है तो फिर कल कैफे में मिलते हैं इसी तरह रजनी दो तीन बार विवेक से मिली और उसे विश्वास में

ले लिया कि वो उस से प्यार करती है फिर एक दिन विवेक ने फोन किया कि तुम आज मेरे कमरे पर आ जाओ वहां बैठकर बातें करेंगे, ये सुन कर पहले तो रजनी घबराई थोड़ा आना कानी की फिर खुद को संयत करते हुए बोली, अच्छा.. चलों तुम इतना कह रहे हो तो जरूर आऊंगी, विवेक बोला तो चलों ठीक है, कल तीन बजे आ जाना और अप. ने कमरे का जहां वो रहता था पता बताया ।

विवेक ने सोचा...चलो पहले गीता अब रजनी मेरा तो काम बन गया ।

दूसरी ओर रजनी ने गीता को विवेक और उस के बीच हुई सारी बात बताई , फिर दोनों धीरे धीरे फोन पर बातें करती रही । तय समय पर रजनी विवेक से मिलने उसके दिए पते पर पहुंच गई । फिर अंदर जाकर रजनी ने ही चाय बनाई और दोनों बातें करने लगे।

विवेक ने रजनी के साथ भी कुछ फोटो लेने की कोशिश की पर जैसे तैसे रजनी बचती रही । रजनी धड़कते दिल से बार– बार दरवाजे की तरफ देखती तभी दरवाजे की घंटी बजी तो विवेक ने दरवाजा खोला, सामने गीता को देख उस के होश उड़ गए फिर वो अंजान बन गीता से बोला कौन हो तुम, किससे मिलना है गीता बोली इतनी जल्दी भूल गए, मैं वहीं गीता हूं जिससे तुम प्यार करते थे जिसके साथ जीने मरने की कसमें खाते थे। अंदर रजनी को देखकर गीता बोली अब तुम इस लड़की की वजह से मुझे पहचान भी नहीं रहे तुम मुझे हर रोज फोन पर ब्लैकमेल करने की धमकी देते थे कि तुम्हारे कुछ कुत्सित फोटो मेरे पास है । मैं आज वो अपने सारे फोटो लेने आई हूं बोलो क्या कीमत चाहिए उनकी , दूसरी ओर रजनी ने जब गीता को दरवाजे पर देखा तभी उसने अपने फोन से विडियो रिकॉर्डिंग का बटन दबा दिया था जिस से वहां घटित हर एक बात फोन में रिकॉर्ड हो गई तभी दरवाजे पर गीता का भाई और उसके दो दोस्त भी आ गए । अब तो विवेक की सीट्टी पीट्टी गुम हो गई उस ने भागने की कोशिश की पर गीता के भाई और उसके दोस्तों ने उसे पकड़ लिया, उसकी जमकर पिटाई की और उसका फोन छिनकर सारी फोटो डिलीट कर दी। गीता का भाई बोला चलो, तुम्हें पुलिस के हवाले करते है जब पुलिस के डंडे पड़ेगें तो सब कुबूल कर लोगे । अब हमारे पास सबूत के तौर पर तुम्हारा विडिओ भी है।विवेक उनके पांव पकड़ कर रोने और गिडगिडाने लगा कि आगे से मैं ये सब नहीं करुंगा मुझे माफ कर दों। गीता के भाई ने कहा पुलिस में इस की एफआईआर दर्ज तो करवा ही देते है नहीं तो ये दुबारा और किसी लड़की का जीवन बर्बाद करेगा। विवेक रोते हुए बोला ये मेरी पहली और आखरी गलती है अब ऐसा कोई काम नहीं करुंगा मुझे माफ कर दीजिए, मैं कसम खाता हूं कृप्या मुझे पुलिस में मत दीजिए। गीता के भाई ने उसे नादान और उसकी पहली गलती मानकर छोड़ दिया। रास्ते में गीता के भाई ने गीता से पूछा ये सब तुम ने कैसे प्लान किया । गीता ने कहा ये सब रजनी दीदी का प्लान था । रजनी पुलिस को भी बुला सकती थी पर रजनी ने समझदारी दिखाते हुए खुद ही समस्या का समाधान खोज लिया था कि सांप भी मर जाए

और लाठी भी ना टुटे ,ये सब रजनी दीदी की बदौलत हुआ जो आज मैं उस बदमाश विवेक के चंगुल से निकल पाई । रजनी ने आगे बढ़कर गीता को गले लगा लिया गीता रजनी के गले लगकर अपने आपको बहुत ही हल्का महसूस कर रही थी।उसके दिल से बहुत बड़ा बोझ हट गया था।

लेखिका का परिचय

बृजबाला गुप्ता

- जन्मतिथि –24 मार्च 1962
- जन्मस्थान – रोहतक (हरियाणा)
- पिता का नाम – ओमप्रकाश बंसल
- माता का नाम – श्री मती लीलावती
- पति का नाम – श्री सत्यप्रकाश गुप्ता
- शिक्षा – हायर सैकेंडरी
- प्रकाशन –एकल काव्य संग्रह 'दिव्य निधि'
- युगानुगूँज मंच से दो सांझा काव्य संग्रह एक बाल साहित्य "धूमधड़ाका"
- शैली साहित्य मंच से सांझा संग्रह त्रैमासिक पत्रिका रजनीगंधा व अन्य पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित
- युगानुगूँज मंच की रोहतक जिला अध्यक्ष

||अंतर्मन का||

मेरे मन में बसों श्री राम
मेरे राम राजा राम,सीताराम
अंतर्मन का तम दूर कर
ज्ञान प्रकाश मन में भर कर
जीवन उजियारा कर दो
मेरे राम।|||
मैं अज्ञानी कुछ न जानूं
पूजा आरती भक्ति न जानूं
बस दिन रात जपू तेरा नाम
मेरे राम।||||
जीवन भर मैने पाप कमाया
तेरे दर पर कभी न आया
मुझे क्षमा करो भगवान
मेरे राम।||||
भंवर पड़ी है नैया हमारी
पार लगा दो तारणहारी
प्रभु तुम हो दया निधान
मेरे राम।|||
प्रभु तेरी दया मिल गई
भव सागर से जया पार हो गई
दे दो चरणों में स्थान
मेरे राम।||||

अर्कवंशी क्षत्रिय(अर्क क्षत्रियों) का इतिहास

अर्कवंश क्षत्रियों का इतिहास बहुत प्राचीन एवं गौरवशाली रहा है । सभी क्षत्रिय वंश की तरह अर्कवंशी क्षत्रियों के इतिहास को नष्ट किया गया परंतु जो अर्कवंश क्षत्रिय समाज के वीर महापुरुषों ने त्याग बलिदान एवं संघर्ष किया उसे नष्ट नहीं किया जा सकता अर्कवंशी क्षत्रियों का इतिहास बहुत ही प्राचीन एवं गौरवशाली रहा है जिसका उल्लेख कई प्राचीन ऐतिहासिक पुस्तकों मे मिलता है ।

पंडित छोटेलाल शर्मा एम० आर० ए० एस० (लन्दन) पुरातत्व विशारद द्वारा लिखे ग्रन्थ जाति अन्वेषण, एवं पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्र द्वारा लिखे ग्रन्थ-जाति भास्कर, क्षत्रिय वंश प्रदीप, भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, राजपुताना का इतिहास, अयोध्या का इतिहास, ट्राइव एण्ड कास्ट, आर्केलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया, अवध गजेटियर, लखनऊ गजेटियर, हरदोई गजेटियर. कानपुर गजेटियर, फतेहपुर गजेटियर, बांदा गजेटियर, बहराइच गजेटियर, हिस्ट्री आफ इंडिया तवारीखे सण्डीला, क्षत्रिय वंशार्णव, अर्कवंशी क्षत्रियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, अर्क क्षत्रिय प्रकाश, अर्कोदय, अर्ककीर्ति, सूर्ययश, अंग्रेज विद्वान, क्रुक व नेबिल शेरिंग द्वारा लिखे ग्रन्थों में अर्कवंश क्षत्रियों का इतिहास मिलता हैं।

नीचे कुछ ग्रन्थों के अंशों को दिया जा रहा है । इस छोटे से पत्रक में इन पुस्तकों के कुछ अंश दिए गए है । जो सज्जन अर्कवंश क्षत्रियों के इतिहास को विस्तार से जानने के इच्छुक हों, उपरोक्त ग्रन्थों का अवलोकन करें ।

इक्ष्वाक वंश के अन्तर्गत सूर्यवंशी राजा मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र जी को अड़तालिसवीं पीढ़ी में सूर्ववंश की शाक्य शाखा का राज्य कपिलवस्तु (नेपाल) में था। यह राज्य कौशल राज्य के नाम से जाना जाता था। राजा शाक्य के पुत्र शुद्धोधन के पुत्र महात्मा गौतम बुद्ध हुए। महात्मा गौतम बुद्ध के कई नामों में से एक नाम अकबंधु भी था ।

अमरकोष ग्रन्थ पेज 4 :-

[शाक्य नाम शशाक्य सिंहः पर्वार्थ सिद्धः सोद्धोधनिचः गौतमाश्चार्कबन्धुश्च मायादेवी सुतश्चसः]

महात्मा गौतम बुद्ध के वंशज अर्कबंधू अथवा अर्कवंशी क्षत्रिय कहलाने लगे । कालान्तर में मुसलमान शासक बादशाह नासिरुद्दीन तुगलक द्वारा प्रताड़ित होने व राज्य छिन जाने पर अर्क अरक व कालान्तर में अरख या आरख कहाये जाने लगे । पंडित छोटेलाल शर्मा द्वारा लिखे ग्रन्थ से अर्को नाम सूर्य वंश, संतति या कुल अर्थात जो सूर्यवंशी क्षत्रिय थे वे ही लोग अर्कवंशी क्षत्रिय कहाये । कालान्तर में जिन सूर्यवंशियों के पास राज्य, धन, बल रहा वे सूर्यवंशी क्षत्रिय कहाते रहे और जिन्हे प्राण रक्षार्थ इधर उधर भटकना पड़ा, वे - कृषि आदि धन्धे में लगकर जीवन निर्वाह करने लगे वे कहीं अर्कवंशी कहीं अरक कहलाने लगे ।

पंडित ज्वाला प्रसाद मिश्र अपने ग्रन्थ जाति भास्कर में क्षत्रिय कुलों की सूची में अर्क- वंश का नाम लिखते हैं परिस्थतिवश इनका नाम अर्क व अरख हो गया, क्षत्रिय वंशार्णव ग्रन्थ के लेखक सूबेदार भगवानदीन सिंह सोमवंशी जी लिखते हैं जो अर्कवंश प्राचीन काल से 14` वीं" शताब्दी तक महान शक्तिशाली था, वही वंश आज पतन के रास्ते पर गरीबी के कारण अपनी पहचान तक खो बैठा है, विडम्बना है जिनके प्रतापी पूर्वज आर्यक या अर्क नामक राजा ने 823 ई०पू० स 802 ई०पू० लगभग 21 वर्ष तक राज्य किया, जिनके राज्य का विस्तार मगध से लेकर अवन्ती (उज्जैन) तक था। इसी वंश का प्रतापी राजा जिसका नाम त्रिलोक चन्द था जिसकी राजधानी ब्रहमइच (बहराइच) थी जिसने 918 में दिल्ली पर चढ़ाई करके वहाँ के राजा विक्रमपाल को पराजित कर दिल्ली का सिंहासन अपने आधीन किया। इसकी पीढ़ियों ने दिल्ली पर राज्य किया था ।

इं. आर.ए. सिंह अर्कवंशी जी के द्वारा लिखी पुस्तक अर्कवंशी क्षत्रियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पुस्तक के पृष्ठ संख्या 19 पर लिखा है

दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में अर्कवंश में तिलोकचन्द नाम के एक प्रतापी राजा हुए हैं। उन्होंने उत्तर-कोशल देश के ब्रम्हाइच (बहराइच) को अपनी राजधानी बनाया। इसके पूर्व अर्कवंशी राजा नन्दिवर्धन के पुत्र बालार्क ने (लगभग 650 ई.पू. में) सर्वप्रथम बहराइच में अपना राज्य स्थापित किया था। लगभग 1600 वर्षों के उपरान्त उनके वंशज तिलोकचन्द पुनः बहराइच में अर्कवंशी राज्य स्थापित किया । अन्य अर्कवंशी क्षत्रिय राजाओं की तरह तिलोकचन्द भी सूर्य के उपासक थे। उन्होंने अपने पूर्वजों की भांति ही 'बालार्क' उपाधि धारण की थी तथा उनका वंश भी 'अर्कवंश' कहलाया ।

अवध गजेटियर, भाग-2, पृ. 354 (1862) पर लिखता है -

"Tilok Chand is said to have been a worshipper of the sun. Near Bahraich is a temple of the sun in his honour called 'Balark'.

अनुवाद - तिलोक चन्द सूर्य के उपासक थे, जिनकी यादगार में बहराइच के समीप एक मन्दिर बना हुआ है, जो कि 'बालार्क' मन्दिर कहलाता है ।

सन् 918 ई. के लगभग दिल्ली के राजा विक्रमपाल को पराजित करके तिलोकचन्द ने दिल्ली पर अपना आधिपत्य कायम किया । अर्कवंश के ये पहले राजा थे जिन्होंने दिल्ली पर अपना शासन स्थापित किया ।

इस सम्बन्ध में अवध गजेटियर (पृ.354) लिखता

"This chief fixed upon Bahraich as the seat of his empire, and led a powerful army against Raja Bikrampal of Delhi, whom he defeated and dispossessed of his kingdom."

अनुवाद - इस राजा ने बहराइच को अपनी राजधानी बनाया और एक शक्तिशाली सेना लेकर दिल्ली के राजा विक्रमपाल पर चढ़ाई कर दी, तथा उसे परास्त कर राज्य- विहीन कर दिया । दिल्ली को जीतने के बाद राजा तिलोकचन्द ने अपने राज्य का कई अन्य राज्यों एवं नगरों को अपने अधीन कर लिया। उपरोक्त गजेटियर इस संबंध में आगे लिखता है -

“He held all the country upto Delhi, and all Oudh upto moun- tains."

अनुवाद - उन्होंने दिल्ली तक सम्पूर्ण क्षेत्र को, तथा पहाड़ी इलाकों तक पूरे अवध को अपने कब्जे में ले लिया।

एवं पृष्ठ संख्या २२ पर लिखा है

दिल्ली पर अर्कवंश का शासन दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में राजा तिलोकचन्द के द्वारा स्थापित किया गया था, जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका। राजा तिलोकचन्द की नौ पीढ़ियों ने यहाँ पर राज्य किया, जिसका विवरण निम्नलिखित है-

⇒ राजा तिलोकचन्द (918-972 ई., 54 वर्ष)
⇒ राजा विक्रमचन्द (972-984 ई., 12 वर्ष)
⇒ राजा अमीनचन्द (984-994 ई., 10 वर्ष
⇒ राजा रामचन्द (994-1007 ई., 13 वर्ष)
⇒ राजा हरीचन्द (1007-1021 ई., 14 वर्ष)
⇒ राजा कल्यानचन्द (1021-1031 ई., 10 वर्ष)
⇒ राजा भीमचन्द (1031- 1046 ई., 15 वर्ष)
⇒ राजा लोकचन्द (1046-1071 ई., 25 वर्ष)
⇒ राजा गोविन्दचन्द (1071-1092 ई., 21 वर्ष)
⇒ महारानी भीमादेवी (1092-1093 ई., 1 वर्ष)

(नोट- उपरोक्त विवरण कई अलग-अलग स्रोतों पर आधारित है। कुछ स्रोतों में राजाओं के नाम मेल नहीं खाते, उदाहरणतया कहीं-कहीं भीमादेवी को पद्मावती भी लिखा हुआ है। इसी प्रकार राजा अमीनचन्द का एक अन्य नाम मानकचन्द तथा राजा तिलोकचन्द का नाम मलुखचन्द भी प्राप्त होता है, परन्तु दिल्ली की राजवंशावली तथा गजेटियरों की तिथियों एवं उल्लेखों के मिलान पर राजा तिलोकचन्द की वंशावली (918-1093 ई.) स्पष्ट हो जाती है।)

राजा गोविन्दचन्द निःसंतान थे। रानी भीमादेवी उनकी पत्नी थीं, जो कि अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति वाली महिला थीं। अपने पति (राजा गोविन्दचन्द) के शासनकाल में वे सदैव प्रजा की भलाई के कार्यों में समर्पित रहीं। उन्होंने अनेक सेवा कार्य किये तथा अपने दयालु एवं दानी स्वभाव के कारण प्रजा में बहुत लोकप्रिय रहीं । राजा गोविन्दचन्द भी उनके प्रत्येक महान कार्य में बराबर के भागीदार रहे। त्याग, दान, समर्पण और जन सेवा की भावना आदिकाल से ही सूर्यवंशियों की परम्परा का प्रमुख हिस्सा रही थी। इसी भावना के वशीभूत होकर राजा हरिश्चन्द्र ने अपना राजपाट तक त्याग दिया था और इसी परम्परा को निभाने हेतु अर्क शिरोमणि रामचन्द्रजी राजगद्दी छोड़ वनवास को चले गए थे। इसी भावना से ओत-प्रोत अर्कबंधु गौतम बुद्ध ने ऐश्वर्य युक्त जीवन की अपेक्षा मानवता की भलाई का कठिन मार्ग अपनाया तथा सूर्यवंश की इसी महान परम्परा को निभाने हेतु सम्राट हर्षवर्धन जीवन-पर्यन्त प्रयासरत रहे। त्याग, दान और जनकल्याण की यही प्रवृत्ति अपने पूर्वजों की भांति राजा गोविन्दचन्द और उनकी पत्नी भीमादेवी ने भी पायी थी। पति की मृत्यु के बाद भीमादेवी ने एक वर्ष तक राज्य किया और उपयुक्त उत्तराधिकारी के अभाव में अपने धर्मगुरु हरगोविन्द को अपना राज्य दान करके परलोक सिधार गयीं।

अंग्रेज विद्वान क्रूक अपने ग्रन्थ में लिखते हैं "अर्क सूर्य की सन्तान है" उन्होंने ब्रहमइच के सूर्योपासक राजा त्रिलोक चन्द के समुदाय का नाम अर्कवंशी क्षत्रिय लिखा है । यह भी बात स्मरण रखने योग्य है कि सूर्य की पूजा आर्य वेदिक काल से करते हैं। अनार्यें व आदिवासी सूर्य की पूजा नहीं करते थे । इससे स्पष्ट होता है कि अर्कवंशी आर्यों की सन्तान हैं और सूर्यवंश के वंशज होने के कारण ये लोग सूर्य की प्रतिमा मूर्ति आदि की स्थापना करते रहें हैं।

अर्कवंशी क्षत्रियों का गौरवशाली इतिहास कई प्राचीन ऐतिहासिक पुस्तकों ग्रंथो मे मिलता है।

ठाकुर एस.के सिंह सूर्यवंशी
संडीला हरदोई उत्तर प्रदेश (भारत)

कर्मभूमि नायिका

सावित्री बाई फुले

घनाक्षरी

(1)

सावित्री बाई फुले जी महान नाम दुनिया में
कर्मभूमि नायिका में आदर से आता है
प्रथम शिक्षिका का उपनाम मिला जिन्हें
अक्सर जिनको माता भी कहा जाता है,
नारियों में शिक्षा की किरण फैलाने वाली
देवी के संघर्षों का विश्व गुण गाता है
ऐसे महान शख्सियत महानायिका को
प्रेमी कोटि कोटि बार शीश को झुकाता है,

(2)

शिक्षा मंदिरों को बनवाने का जूनून लिए
महिला कालेज भी अलग बनवाई हैं
बिटिया की शादी कम उम्र में ना करे कोई
विधवा विवाह के समर्थन में आयीं हैं
पति ज्योतिबा फुले जी राव भी मदद किए
रुढ़िवादियों के आगे झुक नहीं पाईं हैं
अमर रहेगा नाम सदा फुले बाई जी का
हर देशवासियों के दिलों में समाईं हैं

रचनाकार
डॉ गया शंकर प्रेमी
ग्राम एवं पोस्ट चन्दाडीह
जिला बलिया उत्तरप्रदेश

लाल बहादुर शास्त्री जी पर मुक्तक

बचपन संघर्षों में बीता
कुंदन सा तप कर निकला
राह भरी थी कांटो से पर
कहीं नहीं मग में फिसला मातृभूमि का सपूत बहादुर
भारत मां का राज दुलारा
झंझावत को झेलकर तूने जीवन का वह रूप सँवारा
पैदा हुए तू 2 अक्टूबर को जिस दिन गांधी लिए जनम,
जय जवान कह पाक युद्ध में तोड़ दिया दुनिया का भरम।
अन्न अकाल छाया जब देश पर जय किसान का दिया तू नारा
स्वाभिमान में आकर शास्त्री पार लगा दी नाव किनारा।।

रचनाकार–
डॉ0 फतेहचंद बेचौन
कवि एवं साहित्यकार
आनंद नगर, बलिया(उ0 प्र0)

29 जनवरी 2024 को दीपोत्सव कार्यक्रम के दौरान

(राजा राममोहन राय)

विधा– दोहा

जन्म लिया था आपने,राधा नगर कहाय।
राजा है प्रारंभ में, अंत लगा है राय ।।

कर्मकाण्ड का आपने, जमकर किया विरोध।
जाति–पाति के भाव को,कहा महा अवरोध।।

ईस्ट इंडिया के लिए, बने निजी दीवान।
पुनर्जागरण काल में, बने अमिट पहचान।।

मादक पेय विरोध में, छेड़ा था अभियान।
सती प्रथा के अंत में, उनका योग महान।।

रखी देश में आपने, ब्रम्ह सभा बुनियाद।
शिक्षा उनकी है यही, रहे ईश की याद।।

यीशू को माने नहीं, ईश्वर का अवतार।
जनता में करते रहे, अविरल भूल सुधार।।

संस्कृत अरबी फारसी, का था उनको ज्ञान।
जीवन में आदर्श थे, सूफी संत महान।।

मानवतावादी रहे, उनके सतत विचार।
लगता था परिवार–सा, उनको यह संसार।।

रचनाकार
रोमित हिमकर
भरौली बाबू पोस्ट–वाल्टर गंज जिला–बस्ती
उत्तर प्रदेश
वर्तमान पता–चित्रगुप्त हाई स्कूल
पट्टी छिब्बी, लाला के पुरा, छिब्बी, बलिया
उत्तर प्रदेश

स्वामी विवेकानन्द जी

जीवन की भट्टी में खूब जला हूं
लोहा तो पिंघलता है, मैं गला हूं
मुझे ढाला गया कितने सांचों में
तुम्हारे ताप से बहकर चला हूं।

वक्त के हथौड़े भी बहुत सहे मैने
आ! उफ!तक कब हैं कहे मैंने...
अस्तित्व मिटाने कब कसर छोड़ी
तन– मन टूटा प्राण पकड़े रहे मैने।

ताप सह सह कर मैं ज्वाला हुआ
विष पचाकर तन शिवाला हुआ
प्रहार सह बेअसर फौलाद बना
लौहपुरुष युग का निराला बना।

डॉ .चंद्रदत्त शर्मा

स्वामी विवेकानन्द जी

1

सीस सुहै गिरुई पगरी, मुखमण्डल तेज विराजत जाके।
माता भुनेश्वरि ऐसा सपूत निहारि न भाग्य सराहत थाके।
मानवता के सक्षाताहि मूरति धन्य हुआ जेहिके जग पाके।
बारम्बार प्रमाण — नमन विश्वनाथ के लाल को सीस नवाके।।

२

जो कुछ पाठ पढ़ें तत्कालहि, ताहि गुरु को सुना दें जुबानी।
वेद — वेदांग— सनातन धर्म व्याख्याता विवेका का ना कोई शानी।
माया की माया का रंग चढ़ा नहिं योग का योग बना जिंदगानी।
संस्कृति को नव प्राणित कर रखे श्भारत विश्व गुरू श की निशानी।।

३

जाय शिकागो की धर्म सभा , जेहि भारत देश का मान बढ़ाया।
ष्सृष्टि नियंता तो एक ही हैष, फिर कैसा विवाद? का पाठ पढ़ाया।
श्जागो—उठो—लक्ष्य पूर्ण करोश यह जीने का मंत्र जिन्होंने बताया।
ऐसे महर्षि विवेकानन्द स्वामी के सम्मुख बंधक सीस नवाया।।

४

सद् गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस को निज हृदय में ठहराया।
सत्य सनातन धर्म स्थापन श्रामकृष्ण मीशनश ज्योति जलाया।
योग—सुधा—रस पान करा जग में निज देश का मान बढ़ाया।
देश—युवा है ऋणी उनका जेहि जीवन—रत्न अमोल लुटाया।

रचनाकार —
डॉ. रमाशंकर वर्मा श्मनहर
ग्रा—खटंगी , पोस्ट—भरथाव,
जिला—बलिया (उ. प्र.)

गुरूकुल अखण्ड भारत संस्था द्वारा आयोजित दीपोत्सव कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मा. विधायक श्री अमन गिरि जी के साथ संस्थापक महोदय जी

महात्मा गौतम बुद्ध

—कुमारी पलक यादव

ज्ञान के खातिर महात्मा बुद्ध ने वैभव को ठुकराया।
बौद्ध धर्म का ध्वज बुद्ध ने दुनिया में फहराया।
बोधगया में वृक्ष के नीचे ज्ञान उन्होंने पाया।
सारे जग में वह वृक्ष बौद्ध वृक्ष कहलाया।
निरंजना नदी के तट पर साधना को अपनाया।
अल्पायु में बुद्ध जी ने जग में नाम कमायज्ञं

मोक्ष द्वार को पानी में सारा सुख छोड़ दिया।
दिव्य ज्ञान की खोज में पत्नी बेटे से नाता तोड़ दिया।
देश के कोने — कोने में अपना अलख जगाया।
सुख शांति का पाठ बुद्ध ने दुनिया को पढ़ाया।
सारनाथ में सबसे पहले गौतम बुद्ध ने दिया उपदेश।
सत्य अहिंसा शांति का बौद्ध धर्म का यही संदेश।
साधना रत जब बुद्ध हुए तो एक आवाज सुनाई थी।
घायल हंस की आर्त ध्वनि तब उन्हें सुनाई थी।
तड़पते हंस को देख बुद्ध की आंखें भर आई थी।
हाथ फेरा हंस पर तो हंस को मां की याद आई थी।

कुमारी पलक यादव
ग्राम—पोस्ट —छिब्बी
जिला—बलिया(उत्तरप्रदेश)

शिक्षक

मोनिका डागा ''आनंद'', चेन्नई

गुरु का हाथ पकड़ ले बंदे, अंधियारा हर मिट जाएगा,
जीवन के वास्तविक उद्देश्य का असली अर्थ आसानी से समझ आएगा।

कठिन वर्षों के तप से जिसने अपनी शक्तियों को संवारा है,
मनुष्य जन्म लेकर भी देवत्व को निखारा है ,
जीवन अपना समर्पित किया जग को दिशा दिखाने में,
अपने असली उद्देश्य को पहचान लक्ष्य लिया जीवन का तुमको ऊपर उठाने में,

जान गया वह सत्य क्या है, अब तुम्हें जगाने आया है,
भवसागर के दलदल से जीवनकमल खिलाने आया है,
सानिध्य करो ऐसे गुरु का जो आनंद बिखराता है ,
लोह, मोह, दंभ, क्रोध के बंधन से तुम्हें बाहर लाता है ,

अज्ञानता को मिटाकर तुम्हें तेजोमयी बनता है,
हर खुशी है तुम्हारे भीतर इस भाव को सत्य बनता है,
दुखों के जंजाल से मुक्ति का मार्ग दिखाता है,
साथ तुम्हारे हाथ पकड़ के प्रेम के राह पर आगे बढ़ता है,

गुरु का जीवन प्रभु कृपा से सफल हो गया,
बंदे अब तेरी बारी है, मार्ग वह दिखा सकता है,
पर उस पर चलने की मेहनत सारी तुम्हारी है,
जीवन सफल बना लो अपना शायद ही दूसरा मिल पाए,

गुरु का हाथ पकड़ले बंदे, अंधियारा हर मिट जाएगा,
जीवन के वास्तविक उद्देश्य का असली अर्थ आसानी से समझ आएगा।

चन्द्र शेखर आजाद

थे सपूत जो भारत माँ के , बलि वेदी अपनाई थी ।
था परतंत्र देश जब अपना , माँ की लाज बजाई थी ।।

क्रूर अंग्रेजों का , आतंक आसमान पर था ,
लूट मार सम्पत्ति की चारों ओर छाई थी ।
फूट डाल राजाओं में , राज्य हड़पने की नीति ,
विधर्मी वितानियों ने बहुत अपनाई थी ।।

आजाद आया आसमान से , बजी बहुत शहनाई थी ।..........‖1‖

जगरानी जाग गई , भावरा के भाग्य जगे ,
पंडित सीताराम सीताराम धुन गाई थी ।
भाल चन्द्रशेखर का , विशाल चन्द्रशेखर सा ,
निडर सा नायक उसकी लायक निपुनाई थी ।।

बन करके आजाद बनारस में ही अलख जगाई थी ।..............‖२‖

नाम है आजाद मेरा , काम देश आजादी का ,
जज के समक्ष , यह चतुरता दिखाई थी ।
कोड़े कितने पड़ रहे , चिन्ता इसकी कीन्ही नही ,
भारत माता की जय , बड़े जोर से लगाई थी ।।

फूल बिछे मग माला पहनी जेल से हुई रिहाई थी ।................‖३‖

होरो और होरोइन के , पीछे मत भागों प्यारे ,
देश भक्त राष्ट्र प्रेमी , आदर्श बनाइये ।
आज राष्ट्र उन्नति में , बने जो सहायक साज ,
वाद्ययंत्र साथ , उनके यश गीत गाइये ।।

मक्खन मन में मोद मना रहे , हिय प्रसन्नता छाई थी ।...............‖४‖

डा. राजेश तिवारी ''मक्खन''
झांसी उ प्र

शोषित नारी/मां भारती
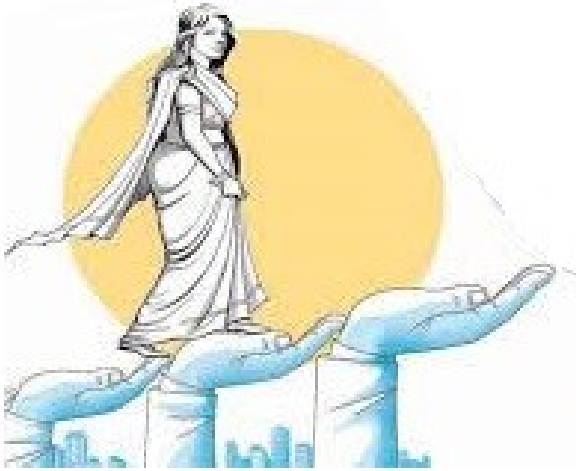
कल मिली मुझे अप्सरा,
चीथड़ो पहने हुई,
अस्मिता सी लूटी हुई,
मुझको बेगानी नही,
जानी पहचानी लगी।

बदहवास सी दौड़ती,
ठोकरे थी खा रही,
रोको कोई उसको जरा,
वाहनों से टकरा रही।

फिर जैसे तैसे उसको हम,
नजदीक अपने ला सके,
ढांढस बंधा धीरज दिला,
कुछ नीर उसको पिला सके।

चेहरे पे उसके तेज था,
पर पीड़ा से लवरेज था,
आंखे थी डबडबाई हुई,
लगती थी जहां की सताई हुई।

जब हमने पूंछा नाम तो,
पहले तो कुछ बोली नहीं,
फिर देखा सबको घूर के,
आंखे अंगारों भरी जैसे वर्षो से सोई नहीं।

वो नारी हूं मैं जो नग्न करके थी दौड़ाई गई,
वो नारी हूं मैं जो कई टुकड़ों में थी पाई गई,
वो बच्ची हूं मैं जिसको रोंदकर मारा गया,
वो ब्रद्धा भी जिसकी आबरू को ,
सरेआम उतारा गया।

वो मां भी हूं ,जिसके बच्चे,
आपस में सारे बंट गए,
धर्म मजहब सियासत में
आधे आधे छंट गए।,

वो नव विवाहिता पत्नी भी हूं,
जिसका पति अभी अभी शहीद हुआ,
वो गरीब भी हूं जिसका जीना,
मंहगाई में शदीद हुआ।

हां मैं ही हूं मां भारती ....
दर्द में कराहती ,
कोई नही पास अकेली रह गई हूं,
असहनीय पीड़ा दलन की सह रही हूं।।
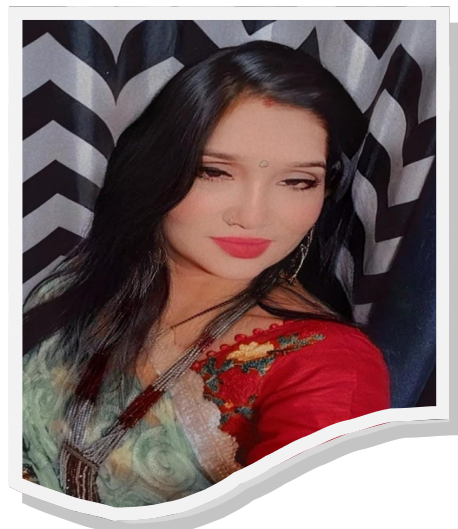
पूनम सिंह भदौरिया, दिल्ली

गांधी जी

गांधी है वो सांस जो बसे है मेरे देश में,
हर कोई गांधी है अहिंसा रूपी वेश में,

गांधी वो प्रकाश है जो तिमिर को दूर करें,
देश छोड़ जाने खातिर शत्रु को मजबूर करें,

गांधी है वो सोच जो कुबुद्धि पे प्रहार है,
देश के लिए तो गांधी देव अवतार है,

गांधी जी वो प्रेम है जो घृणा को मिटाते है,
प्रेम और अहिंसा का महत्व ये समझाते है,

गांधी जी का नाम मात्र जीत है संघर्ष है,
गांधी जी की देन है कि देश ये उत्कर्ष है,

गांधी जी वो मान है सम्मान है दिनमान है,
अंग्रेज रूपी रात मिटाने वाला वो महान है,

गांधी मेरे देश की वो आस्था है पंथ है,
गांधी जी का योगदान देश को अनंत है,

कोटि कोटि करते नमन उस रूप को,
फिर से आना जरूरी गांधी के स्वरूप को।

आदित्य कुमार
(बाल कवि)

अब लौट रे नाविक

सांझ हुई,
अब लौट रे नाविक,
रास्ता ताक रही होगी,
प्रेयसी भाविक,
चिड़िया भी
अपने घर गयी,
पौधे भी सो गये,
फूलों की सीरत कुम्भलाई,
रजनी आने को अकुलाई ।

गोधूलि की,
शीतल बेला,
मंद—मंद
हवाओं का मेला
रात्रि प्रहर की
फैल रही है लय
फैल रहा चारों तरफ़
धुंध प्रलय
घर—घर दीपक की
उजियारी छायी
आजा प्राण प्रिये
मीठी मीठी खीर बनायी ।।

प्रतिभा पाण्डेय ष्प्रतिष
चेन्नई

माँ सरस्वती वन्दना

✍तुलसीराम ''राजस्थानी''

हे हंस—वाहिनी शारदे, जीवन हमारा संवार दे

हम तो हैं बालक नादान
नहीं है हमें कुछ भी ज्ञान
उजड़ी हुई जिंदगानी में, तू विद्या का भंडार दे
हे हंस—वाहिनी शारदे, जीवन हमारा संवार दे ।

भटक रहे हैं इधर—उधर
राह ना दिखे जाएं किधर
डगमग डोले रहे हैं पांव, अब तू ही आधार दे
हे हंस—वाहिनी शारदे, जीवन हमारा संवार दे ।

राग—द्वेष से भरा है मन
सर्वत्र हो रहा है पतन
बीच भंवर में अटकी नाव, अब तू ही तार दे
हे हंस—वाहिनी शारदे, जीवन हमारा संवार दे ।

जगत में फैला पापाचार
सब छूट गए हैं संस्कार
षराजस्थानीष अर्ज करे, कलम को नई धार दे
हे हंस—वाहिनी शारदे, जीवन हमारा संवार दे ।।

कलयुग के राम खंड पर, आरंभ अब प्रचंड कर

स्व प्रज्ञित अग्र कदम,
अंतरतम दृढ़ संकल्प ।
आज्ञा अनुपालन शिरोधार्य,
श्रम निष्ठ ध्येय प्रकल्प ।
नित गमन सत्य पथ,
अवरोध बाधा खंड खंड कर ।
कलयुग के राम खंड पर,आरंभ अब प्रचंड कर ।।

राघव मर्यादा वैदेही शील,
सहृदय सहर्ष आत्मसात ।
चरित्र ओज नवल धवल,
आदर्श अधिगम साक्षात ।
आहूत सकारात्मक सोच ऊर्जा,
सर्व मंगल साधना अखंड कर ।
कलयुग के राम खंड पर,आरंभ अब प्रचंड कर ।।

तज नैराश्य भाव भंगिमा,
उत्साह उमंग जोश जगा ।
आशा किरण ज्योत तले,
क्रोध वैमनस्य भय भगा ।
मैत्री अपनत्व परिवेश उत्संग,
जीवन अनुपमा मार्तंड भर।
कलयुग के राम खंड पर,आरंभ अब प्रचंड कर।।

सद्गुण सात्विकता पताका,
अंतर्मन पटल नव्य लहरा ।
स्वच्छ स्वस्थ आचार विचार ,
व्यवहार सद्चरित ध्वज फहरा ।
वंदन निज संस्कृति संस्कार परंपरा,
समग्र प्रगति अथक प्रयास मंड ।।
कलयुग के राम खंड पर,आरंभ अब प्रचंड कर ।।

—: महेन्द्र कुमार

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय
(सन १८६५-१९२८)

लाला लाजपत राय के अन्दर, अनल भरा था उर अभि —अंतर।
लक्ष्य अटल था भाव प्रबल था, क्रांति वीर थे, वह अभ्यंकर।।

स्वातंत्र्य समर के अनुपम योद्‍धा,जन सेवक थे अप्रतिम महान।
कठोर साधना— पथ चल कर ही,पुरूषार्थी बने साहसी वे धैर्यवान।।

दृढ़ संकल्पित थे, तत्पर मन थे, अनवरत थे करते अछूत उद्धार।
विधर्मी से रक्षण करके बने सचेतक, हिन्दू मन मानस में किया सुधार।।

सम्पादक थे समाचार पत्र के, वैदिक श्श्डी०ए०वी०कालेज समाचारष्।
कार्यवाहक प्रबंधन सहयोगी, थे, ‘आर्य मैसेंजर’, ‘भारत सुधार’।।

द्रुति गति दी स्वातंत्रय समर को, श्यंग इण्डिया श्में उनके छपे विचार।
दादा भाई नौरोजी के स्वराज्य मंत्र का, पिटवा दिया डंका, अद्‍भुत ग्रंथकार।।

आर्य विचारों के रक्षक पोषक, आर्य समाजों को किये गतिमान।
हिन्दू महा सभा के स्थापन प्रेरक, कहते हिन्दी, हिन्दू, हिन्दूस्तान।।

चन्द्रगुप्त प्रसाद वर्मा ‘‘अकिंचन’’ गोरखपुर

धरती थमी नहीं है.!

इस अनमने तृषित जीवन का,
कल स्वर्णिम नूतन होस
जितने प्रश्न दबे मिट्टी में,
उनका भी मंचन होस

युगों युगों की प्यासी तृष्णा,
मिले, रक्त पी लेगीस
नर्क भोग कर आयी बाला,
कंटक में रह लेगीस

उदर क्षुधा वर्षों की पोषित,
निश्चित हैवान बनेगीस
श्वासों का आयाम बचाने,
फिर अपराध जनेगीस

सुन रे मना! तू जाँच स्वयं को,
तुझ में कमी नहीं हैस
उठ कर देख बहुत अवसर है,
धरती थमी नहीं हैस

सुमित अर्कवंशी, लखनऊ (उ. प्र.)

हे मातृभूमि ! तेरे चरणों में सिर नवाऊँ ।
मैं भक्ति भेंट अपनी, तेरी शरण में लाऊँ ।

माथे पे तू हो चन्दन, छाती पे तू हो माला;
जिह्वा पे गीत तू हो, तेरा ही नाम गाऊँ ।

जिससे सपूत उपजें, श्रीराम—कृष्ण जैसे ;
उस धूल को मैं तेरी निज शीश पे चढ़ाऊँ ।

माई समुद्र जिसकी पदरज को नित्य धोकर;
करता प्रणाम तुझको, मैं वे चरण दबाऊँ ।

सेवा में तेरी माता ! मैं भेदभाव तजकर;
वह पुण्य नाम तेरा, प्रतिदिन सुनूँ सुनाऊँ ।

तेरे ही काम आऊँ, तेरा ही मन्त्र गाऊँ ।

तरुण बंदा, पंजाब भारत

यह दिव्य तिरंगा है..

यह दिव्य तिरंगा है फर , फर फहराएगा,
धरती से अम्बर तक यह नित लहराएगा।
यह दिव्य तिरंगा है बहती यहां गंगा है,
झण्डा यह न्यारा है विधिवत लहराएगा।
यह दिव्य..............................।।१ ।।

यह मान है भारत का सम्मान है भारत का,
हैं तीन रंग इसमें हर पल लहराएगा।
झुकने ना कभी दूंगा यह शान हमारी है,
वीरों का गौरव यह नित नव दिखलाएगा।
यह दिव्य तिरंगा.........................।।२ ।।

यह देश भगत सिंह का जिसने फांसी चूमी,
डस फांसी के फंदे का यह शौर्य दिखाएगा।
यह राम की धरती है यह राम का अम्बर है,
स्सार में यह झण्डा अधिकार जमाएगा।
यह दिव्य तिरंगा.........................।।३ ।।

यह देव भूमि भारत ऋषि— मुनि यहां रहते,
भारत की वसुधा पर यह नित लहराएगा।
यहां रंग प्रकृति खिलता कोयल गाती उपवन,
दिनकर अपना झण्डा अम्बर लहराएगा।
यह दिव्य तिरंगा.........................।।४ ।।

पंकज सिंह दिनकर, लखनऊ उत्तर प्रदेश

कितनी गर्मी, बरसात या हो चाहे सर्दियां ।
हर वक्त हिफाजत में खड़ी रहती है वर्दियां ।।

अपने घर सुकूं से आज अगर सोते हम तो ।
हमारे लिये रात—दिन जागती हैं वर्दियां ।।

देश अपना हर वक्त रहे सुरक्षित यही सोच।
सीमा पर आज देखो कितनी खड़ी है वर्दियां।।

सौ—दो सौ के नाम पर यू बदनाम मत करो।
वक्त जब आता अपनी जान देती है वर्दियां ।।

फर्ज होते हैं एक साथ इनके भी कई—कई।
इतना आसान नहीं है पहन लेना वर्दियां ।।

जब—जब दुश्मन से होता है सामना कहीं भी।
जान हथेली पे अपनी रख लड़ती है वर्दियां।।

फर्ज के लिए कभी—कभी ऐसा भी होता है।
माँ की अर्थी को कंधा दे न पाती वर्दियां ।।

अनूप ''एकलव्य''
बाराबंकी, उत्तर प्रदेश,

जनता ही सर्वोच्च विधाता

आदित्य कुमार, (बाल कवि)

वर्षों से सही गुलामी पर अब वक्त हुआ,
राजा के प्रति है रुख जनता का सख्त हुआ,
अब और नहीं बस बहुत खेल शासन के खेले,
वर्षों वर्षों तक राज कर लिया स्वयं अकेले।

शायद जनता को अब ये मंजूर नहीं,
गणतंत्र अधिक अब और दिनों तक दूर नहीं,
सोई जनता को राजा और अंग्रेजों से,
दुख दर्द मिले काफी जनता ने सभी सहे,

पर अब पलटा है वक्त मिला अधिकार है अब,
जनता को जुल्मी तंत्र नही स्वीकार है अब,
अब जाग गई जनता में हैं स्वामित्व आग,
अब राजतंत्र चल भाग भाग तू भाग भाग।

अब गद्दी पे किसी एक का हो अधिकार नही,
हो कोई राजा का बेटा हकदार नहीं,
अब खुद जनता गद्दी पे हुई विराज सुनो,
जनता ने पहन लिया सत्ता का ताज सुनो,

अब जनता से कोई बड़ा नहीं कोई उच्च नही,
अब जनता राजा के आगे है तुच्छ नही,
मौलिक अधिकारों से प्रजा ने श्रृंगार किया,
अब स्वयं प्रजा को राजा का अधिकार मिला,

है संविधान की देन आज गणतंत्र मिला,
जनता को राजा बनने का मंत्र मिला,
संविधान से मिला आज अधिकार सभी,
संविधान ने कहा राजा स्वीकार नहीं!

अब ना कोई सेहंसा होगा, ना कोई रहे आलंपना,
ना कोई अब हुकुम रहेंगे ना ही कोई बादशाह,
ना कोई एक अकेला देश को लूटेगा,
प्रश्न पूछने पर जनता को कूटेगा,

अब तो जनता ही सर्वोच्च विधाता होगी,
भारत की हर काल का निर्माता होगी,
अब जो होगा जनता के मंथन से ही,
देश चलेगा अब जनता के मन से ही,

अब सोचों ये शक्ति किसने दी इनको,
किसने बना दिया है राजा जन जन को,
किसने इनके सिर पे मुकुट सजाया है?
किसने गद्दी पे इनको बैठाया है?

संविधान इसका उत्तर है उसने ही शक्ति दी है,
इसलिए तो राजा ने जनता की अब भक्ति की है,
अब अधिकार मिला जनता को मुंह खोल कुछ कहने का,
वक्त हुआ अब खत्म राजा के राजतंत्र को सहने का।

आदित्य कुमार
(बाल कवि)

महादेवी वर्मा के प्रति

महीयसी देवी कवयित्री, मानव की वरदानी,
अलख जगाती रही अहर्निश, जीवन भर बलिदानी।
सीमा में रहकर असीम के रूप मुखर करती थी,
महाशक्ति का सूक्ष्म विवेचन गीतों में करती थी।
पावन गंगा सी शुचिता गीतों में निरत विभासित ।
जीवन की वेदना काव्य में होती रही प्रकाशित ।।

तव 'अतीत के चलचित्रों' में स्मृति की रेखा अंकित,
बनी 'श्रृंखला की कड़ियाँ' भावोन्मोषित अभिव्यंजित।
रश्मि, निरजा ओ नीहार में सान्ध्यगीत में दीपशिखा ,
यामा की कविताओं में तव जीवन का इतिहास लिखा ।
पीड़ा की अत्यानुभुति में जीवन सुख पाया है,
नीरभरी दुख की बदली बन मधुर गान गाया है ।
पीकर तुमने गरल, विश्व को अमृत दान किया है,
उसके बदले में तपस्विनी कुछ भी नहीं लिया है।

घीसा से कितने अबोध तव अनुकम्पा के भागी,
तेरी छाया पाकर के कितनों की किस्मत जागी ।
काँटों की भाषा का उत्तर फूलो से देती थीं,
पीड़ा की सीमा में रहकर दु:ख को सह लेती थीं।
श्रद्धा सुमन स्वीकार करो देवी कविता की रानी,
परम पूजनीया यशस्विनी, करुणामय कल्याणी ।

डॉ. रामसेवक 'विकल' जी
इसारी सलेमपुर, बलिया
उ०प्र०

वीर सुभाष जी

—डॉ० आदित्य कुमार 'अंशु'

बंगभूमि के वीर लड़ाका ऐसे थे अभिमानी
कायस्थ कुल के कुलभूषण का नहीं कोई था शानी ।
आइ.एस. परीक्षा पास कर देश का मान बढ़ाया
अपने ज्ञान का परचम घरदृघर में फहराया
नौकरी को त्यागकर आहुति देने को ठानी ।

रार छिड़ी जब गोरो से गरम दल अपनाया
देश की खातिर सुभाष बाबू ने सारा जीवन खपाया
घरदृपरिवार छोड़ चले वे ऐसे थे वे शानी ।
'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगाश जीत का मंत्र बताया
देश का हर योद्धा यही मंत्र दोहराया
नरम दल को सुभाष बाबू से होती थी परेशानी ।

अण्डमान के रास्ते सुभाष जी जब पहुँचे जापान
उनका साहसदृशौर्य देखकर सरकार रही हलकान
आजाद हिन्द फौज गठन से गोरो को हुई परेशानी ।
जीवन भर की कमाई को जब बूढ़ी माँ ने दान दिया
सुभाष जी की गीली आँखों ने तब उनका सम्मान किया
इतिहास के पन्नों में बूढ़ी माँ बनी सबसे दानी ।
प्लेन क्रेश की अफवाहों ने जब उनको गुमनाम किया
अवधपुरी की एक कुटिया ने गुमनामी बाबा नाम दिया
ऐसे वीर योद्धा को भारत वासी करे सलामी ।

डॉ० आदित्य कुमार 'अंशु'
इसारी सलेमपुर, बलिया

मुस्कान

हर चेहरे की है रौनक ये,
और सबसे बड़ा श्रंगार है।
हर खुशियों का है दामन ये,
जो देता सब को प्यार है ।

जब सज जाए ये चेहरे पर
हर मुश्किल छोटा लगता है
यह भूल के सारी बातों को
खुश होकर मुख पर खिलता है।

जब बातें कर दे हृदय द्रवित
ये हो जाते हैं पुन: उदित।
यह वनमाली का हार लिए
यह खुशियों का संसार लिए
यह पौराणिक युगवाणी है
यह चंद्रलोक का चाँद है
यह साधकता है करुणा की
और बारिश की बौछार है।

यह स्वर्णरश्मि और परिमल है
यह जीवन रूपी मधुजल है
यह सुरबाला की प्रतिमा है
और वृजपटल पर मृदुफल है ।।

यह दीप्तिमान उत्साहयुक्त
कौशलता की पहचान है
दुनिया के गहनों से बढ़कर
चेहरों का मुस्कान है ।।

यह वीर पुत्र के चेहरों पर
सजता तिलक सामान है,
यह सूरवीर की साहस है,
और मीठा सा मिष्ठान है ।।

शिखा शुक्ला
काशी हिंदू विश्वविद्यालय
बी.ए.(द्वितीय वर्ष)

दान

मोनिका डागा "आनंद" , चेन्नई

रघु गर्मी की छुट्टियों में अक्सर अपनी नानी के घर जाया करता था । एक बार की बात है नानी रघु को साथ लेकर पास के सब्जी बाजार से सब्जी लेने गई । नानी सब्जी खरीद रही थी, पर ये क्या नानी ने कुछ सब्जियों को अलग एक थैले में सब्जी वाले से बंधवाया । रघु ये सब बड़े आश्चर्य से देख रहा था। नानी ने अलग सब्जियों का पैकेट क्यों और किसके लिए बनवाया है ? ऐसे कई तरह के प्रशन रघु के दिमाग में दौड़ रहे थे ———————

सब्जी वाले को रुपए देकर नानी रघु को साथ लेकर घर के पास वाली छोटी गली में गई । वहां एक बूढी दादी को नानी ने दुसरे सब्जी वाला थैला थमा दिया और उनसे रुपए भी नहीं लिए थे । फिर वे लोग घर आ गए ।

थोड़ी देर बाद फुर्सत के क्षणों में जब नानी कमरे में आराम कर रही थी तब रघु ने नानी से पूछा , नानी आपने दूसरा सब्जी वाला थैला उन बूढी दादी को क्यों दिया ? "नानी ने बड़े प्यार से रघु को अपने पास बैठाया और सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, ' बेटा हर व्यक्ति को अपने सामर्थ्य व शक्ति के अनुसार कुछ दान अवश्य करना चाहिए और सबसे बड़ी बात यह दान गुप्त होना चाहिए । "नानी ने आगे कहा," रघु दान करने से व्यक्ति के अंदर सात्विक भाव जागृत होते हैं उसको बहुत सारा आशीर्वाद और ढेरों दुआएं मिलती है, यही दुआएं और आशीर्वाद उसके जीवन की रक्षा करती हैं और उसे भाग्यशाली भी बनाती हैं ।

दान

मोनिका डागा ''आनंद'' , चेन्नई

हमारे शास्त्रों में भी दान की महिमा अनेक को रूपो में वर्णित है ।

''दानं ही सर्वेव्यसनानि हन्ति ।''

अर्थात् दान से ही सभी कष्ट दूर होते हैं ।

नानी बड़े प्यार से आगे कहती है रघु हमें किसी न किसी रूप में अपने जीवन में अपने आय का कुछ प्रतिशत हिस्सा गुप्त रूप से दान कर अपना सामाजिक सहयोग अवश्य करना चाहिए और सबसे मुख्य बात है रघु दान हर किसी को नहीं केवल सुयोग्य पात्र को ही देना चाहिए ,चाहे फिर वह अन्न दान , वस्त्र दान,या फिर कोई और दान ।

रघु के मन में नानी के यह दान वाली बात उतर गई थी । उसके सारे प्रश्नों के उत्तर मिल गए थे । रघु ने अब दान को अपने जीवन का हिस्सा बना लिया था । आज रघु कई बड़ी—बड़ी कंपनियों का मालिक है व कई सारे सामाजिक कार्य कारणी संस्थाओं का अध्यक्ष भी है। ॆ नानी की सीखाई गई शि क्षा और संस्कारों को वह खुद भी निभा रहा है और उनको आगे भी बढ़ा रहा है।

मोनिका डागा ''आनंद''
चेन्नई

‘‘विवेकानंद’’

सुनीलानंद, जयपुर, राजस्थान

(१)‘‘वि’’, विश्वास

की अटल पूँजी के बल पर
पूरे विश्व में इनकी वाणी गूंजी !
कभी ना हारो स्वयं से तुम यहाँ.....,
धैर्य लगन ईमान है जीत की कुँजी !!

(२)‘‘वे’’, वेगवान

बन सदैव बढ़ते ही रहो
रुको ठहरो नहीं जीवन में कभी !
उम्मीदों के सेतु बनाए चलो....,
जीवन में डरना नहीं तुम कभी !!

(३)‘‘का’’ कामनाएं

कभी कम ना होने दें
जीवन में बढ़ते रहें उत्साह संग !
हैं आनंद की खान हम स्वयं ही.....,
बने रहें सदा यहाँ खुश प्रसन्न !!

(४)‘‘नं’’ नंद आनंद

चलें प्रेम संग जीवन जीएं
कभी ना किसी का तिरस्कार करें !
संघर्षों से लड़ते सतत आगे बढ़ते...,
जीत से कम कुछ स्वीकार ना करें !!

‘‘विवेकानंद’’

(५)‘‘द’’, दयामय

हो प्रेम करुणा से भरा हृदय
सभी के प्रति रहे सहयोग का भाव !
और देशभक्ति के उदगारों से भरे हम...,
चलें बनाएं जीवन में प्रेम सद्भाव !!

(६)‘‘विवेकानंद’’, विवेकानंद बनें

फैलाएं चहुँ ओर ज्ञानप्रकाश
पहचाने अपनी आत्मबल शक्ति !
चलें जीवन को समग्रता संग जीते.,
बढ़ाए चलें सदा राष्ट्रप्रेम भक्ति !!

सुनीलानंद
जयपुर, राजस्थान

जब सरसों के खेत पुष्प सहित लहराते है,
सनसनाती धूप से लोगो के दिल मिल जाते है।

इसी समय लोगो के रिश्तों में भी नए नए परिवर्तन आते है ,
कुछ रिश्ते जुड़ते तो कुछ अनचाहे खो जाते है।

हवाएं अपना ऐसे रुख बदलती जाती हैं,
जैसे तितली भंवरो के संग ताल से ताल मिलाती है।

सभी व्रक्षो की डालो पर भी अब पुष्प लहराने लगते है,
जीव-- जंतु और पशु ,पक्षी इस ऋतु का आनंद उठाने लगते है ।

इस ऋतु के आने से खेतों की उपज बढ़ जाती है,
ग्रामीण लोगो के जीवन में एक नई उमंग छा जाती है ।

हवाएं भी अब अपनी धुन में एक नया एहसास बनाती है,
जोरो से आती है खिड़की पर और अन्तर्मन छू जाती है।

एक नई किरण को साथ लिए जब बसंत ऋतु आती है ,
जीवन जीने के कुछ अनुभव और नई तरंग दे जाती है ।

अंतिमा अग्निहोत्री
(फतेहपुर उ०प्र०)

!!! वीर शिवाजी राजे !!!

तुम्हारे हाथों में थी शक्ति युग प्रवर्तन की,
हृदय में आशा थी जोखंडमुक्त महाराष्ट्र की।
क्षात्रतेज और स्वाभिमान तुम ने पुनर्जिवित किया,
पराधीन भूमि से असंख्य लढाकू तैयार किए।

भालों —बरचों और तलवारों संग आ गए अनेक वीर,
शत्रुमुक्त की भूमि समय — समय पर वीरों के दे सिर।
मन में बाणा था धर्म और देश का,
इसीलिए लढे शत्रु संग बाजी लगाए जान की।

समय — समय पर अनेक बार लढे जी जान से,
काल भी डर गया शूरता से ,वीरता से।
महाराष्ट्र के महान नेतृत्व तुम पराक्रमी,
असंख्य मौल्यवान रत्न न्यौछावर गौरवार्थ तुम पर।

लढाकू तुम मराठी महाराष्ट्र भूमिपुत्र,
अचल प्रेरणा बने रहो हमारे हृदयों में सर्वत्र।
तोफों को भी पराजित न हुए जिनके भाले और बरचे,
उन वीरों के वीर शिवाजी राजे!!!

(''महाराष्ट्र'' से तात्पर्य ''महान राष्ट्र'' से है, न की ''महाराष्ट्र राज्य'' से।)

श्री. उमाजी सुभाष पाटिल
स्थायी पता — चरण, तहसिल —शाहुवाडी , जिला —कोल्हापुर (महाराष्ट्र) जन्म तिथि — ०३ जून १९८५
जन्म स्थान — चरण , तहसिल —शाहुवाडी , जिला —कोल्हापुर
लिंग — पुरुष
धर्म—जाँति हिंदू—मराठा
नागरिकत्व— भारतीय
भाषाओं की जानकारी रू— मराठी, हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत
उपाधियां — एम. ए., एम. फिल.(हिंदी)
विशेषीकरण — एम. ए.(हिंदी—व्यावसायिक वर्ग)
पुरस्कार एवं सम्मान —
१. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा''श्प्रोत्साहन पुरस्कार'' प्राप्त ।
२ एस. एल. बावा डी.ए.वी. कॉलेज , बटाला द्वारा ''प्रोत्साहन पुरस्कार'' प्राप्त किया ।
३ साहित्य संगम संस्थान नई दिल्ली द्वारा ''आजाद—ए—हिंद'' सम्मान से विभूषित।

वीर पुरुष महाराणा प्रताप

नतमस्तक हो जाता है
हर मानवता का मानव
जब ऐसा तेज निकलता है
दृढ संकल्पित हो जाता है
हर मानवता का मानव,
जब ऐसा वीर निकलता है
वीर भूमि का पर शौर्य, पराक्रम,
बलिदान का अद्भुत पुष्प खिलाता है,
युगो —युगो तक चलती है
गाथाएं जब ऐसा सूर्य निकलता हैद्य

इंद्रधनुष की सतरंगी किरणें
अभिवादन करती हैं ,
जब ऐसा तेज निकलता है
झरनों की झंकारें बंदन करती है,
जब ऐसा भाल चमकता है
देश का हर कोना— कोना
गौरव का अनुभव करता है
देदीप्यभाल चमकता है
जब ऐसा सपूत निकलता है द्य

कथनी को करनी में
करने का साहस जो रखता है
लाखों के सम
एक अकेला ही टिकता है
दुश्मन उसके आगे न टिक पाते है

वीर रस का प्रतिमूर्त
सदियों में कभी —कभी
राणा सा सूर्य निकलता है
सदियों में कभी —कभी
राणा सा सूर्य निकलता हैद्य

चहूं दिशाओं में तेज चमकता है
तलवारों की धारों पर शौर्य निखरता है
विजय पताका लहराती है
जब राणा सा सूर्य निकलता है
जब राणा सा सूर्य निकलता हैद्य

तेज नहीं ,तेजो का पुञ्ज दहकता है
रण भी थर, थर, थर कंपता है
पराक्रम की गाथा के आगे
नतमस्तक हो
शौर्य भूमि भी उसकी गाथा लिखती
है
सदियों में कभी—कभी
राणा सा सूर्य निकलता हैद्य

हल्दी घाटी की शौर्य भूमि में
राणा का तेज दहकता है..
मिटटी के कण —कण में राणा
की गाथाओं का अमृत बहता है,
हल्दी घाटी का गौरव कहता है
सदियों में कभी—कभी
राणा सा सूर्य निकलता है..।।

महाश्वेता राजे
जन्म स्थान—घुश्मेश्वर नाथ मंदिर के पास, ग्राम — डभियार पोस्ट —कुंभापुर
जिला —प्रतापगढ़
वर्तमान समय में कार्यरत—शिक्षक के पद पर ,

विशिष्टतम नेता थे अटल बिहारी

स्वच्छ राजनीति के अप्रतिम पुजारी,
विशिष्ट तम नेता थे अटल बिहारी.
असीम , अदम्य साहस के प्रतीक,
भारत का जन मन आप पर बलिहारी.

संपूर्ण विश्व का दबाव झेल कर भी,
परमाणु विस्फोट की ली स्वत: जिम्मेवारी.
जे पी आंदोलन के आप थे प्रमुख स्तंभ,
शांति, क्रांति के अग्रदूत सुविचारी.

भाषा वाणी का आप में था अद्भुत समन्वय,
ओज ,देश भक्ति की थी भावना भारी.
दृढ़ निश्चय ,सिद्धांतो के प्रति प्रतिबद्ध,
सुविधा की राजनीति आप ने कभी न स्वीकारी.

सब की साथ ले कर चलने का था हुनर,
देह भले ही थकी ,किंतु हिम्मत न हारी.
सत्य,कर्तव्य ,शुभ संकल्पों से युक्त,
भारत की अस्मिता के थे आप सच्चे उत्तराधिकारी.

रमाकांत शर्मा
(डांडेली, कर्नाटक)
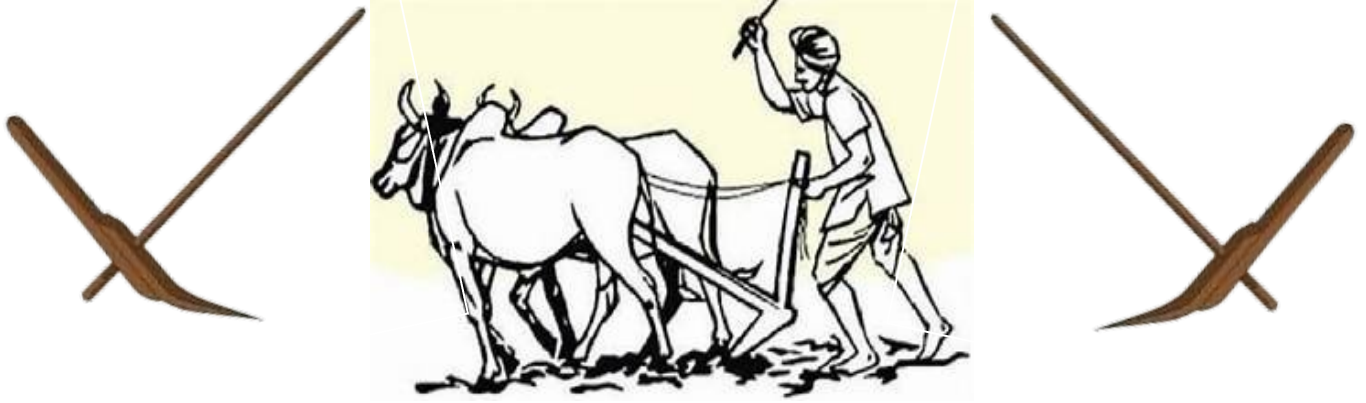
लाखो ही कर्म है या हमे तो माटी
ने मोह लिया कृषि ने लाखो करोड़ों
को सींचा इससे छोड़ हम कहा जाए।
कोई कलेक्टरए कोई चिकित्सक एकोइ
बने अध्यापक सबसे ऊपर तुझको
चाहा बन गए हम कृषक ।

लाखो किताबे पढ़ ये पद निधारित
किया हैए किसी की गुलामी क्यू करे
जब माटी ने मालिक बनाए है मुझे
माटी तुझे को पूजे हम तुझको ह।
चाहाएहै पहले तो अज्ञानी थे आज
ज्ञान संग आयेगा।

कोई थोप कोई हथियार नही
केवल माटी को सींच रहे है
करोड़ों का व्यापार चला रहे है
लाखो लोगो को सैयद ये एहसास
भी नहीं पर उनकी हरियाली
और पधुन्नति की वजह बन रहे है
आज हम सुखी मिट्टी को सींच जो
सोने के खलियान बनाए कोई
और नही मेरे ईश्वर है या मेरे भाई कृषक ।

जाने ना जाने कब इस माटी के
लाला और नायक बन गए।
शायद आज सभी फार्मर
कर्मभूमि के नायक बन गए

अनुप्रिया कुमारी

''किसान''

भारत है कृषि प्रधान देश
इसमें किसान का स्थान है विशेष
किसान है भूमि पुत्र
धरती मां का लाल
दिन रात मेहनत करता
सभी को करता मालामाल
न चिंता स्वयं की करता
न किसी मौसम से डरता
स्वयं भूखे रह कर
औरों का पेट भरता
राष्ट्र का कर्णधार
राष्ट्र का वीर
किसान राष्ट्र का अन्नदाता
किसान राष्ट्र का निर्माता
किसान राष्ट्र को देता गति
राष्ट्र आज कर रहा प्रगति
विश्व में भारत की पहचान
भारत देश कृषि प्रधान
यही है अर्थव्यवस्था की जान
आज हमारा देश इसी से
महान
कृषि पर टिका है हमारा
जहान
किसान की मेहनत से
भारत है महान
किसान की उन्नति
राष्ट्र की प्रगति
देश में बदल रहे उत्कर्ष
हर जगह सफलता मिलती
किसान की मेहनत
को राष्ट्र करता नत

डा.अशोक जाटव,
राही भोपाल, मध्यप्रदेश

धान्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम् ।
लाभानां श्रेय आरोग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा ॥

भावार्थ:

अन्नों में उत्तम निपुणता है। धनों में उत्तम शास्त्र-ज्ञान है।
लाभों में उत्तम नीरोग (उत्तम स्वास्थ्य) है। सुखों में उत्तम सन्तोष है।

सादर : गुरूकुल अखण्ड भारत
E-Mail : info.gurukulakhandbharat@gmail.com
बेबसाइट : **www.gurukulakhandbharat.org,** सम्पर्क सूत्र : +91 7599289803